



भारत का राजपत्र The Gazette of India

असाधारण
EXTRAORDINARY

भाग I—खण्ड 1
PART I—Section 1

प्राधिकार से प्रकाशित
PUBLISHED BY AUTHORITY

सं. 136]

नई दिल्ली, मंगलवार, मार्च 31, 2009/चैत्र 10, 1931

No. 136]

NEW DELHI, TUESDAY, MARCH 31, 2009/CHAITRA 10, 1931

वाणिज्य एवं उद्योग मंत्रालय

(वाणिज्य विभाग)

(पाटनरोधी एवं संबद्ध शुल्क महानिदेशालय)

अधिसूचना

नई दिल्ली, 31 मार्च, 2009

प्रारम्भिक जांच परिणाम

विषय : यूरोपीय संघ के मूल के अथवा वहां से निर्यातित थियोनॉयल क्लोराइड के आयातों से संबंधित पाटनरोधी जांच ।

फा. सं. 14/1/2008-डीजीएडी.—वर्ष 1995 में यथासंशोधित सीमाशुल्क टैरिफ अधिनियम, 1975 (जिसे आगे अधिनियम कहा गया है) तथा उसकी सीमाशुल्क टैरिफ (पाटित वस्तुओं की पहचान, उन पर पाटनरोधी शुल्क का आकलन एवं संग्रहण और क्षति निर्धारण) नियमावली, 1995 (जिसे आगे नियमावली कहा गया है) को ध्यान में रखते हुए;

1. यतः मै. ग्वालियर कैमिकल्स एंड इंडस्ट्रीज लि., नागदा और मै. ट्रांसपैक इंडस्ट्रीज लि., बड़ोदरा (जिन्हें आगे आवेदक कहा गया है) ने यूरोपीय संघ (जिसे आगे संबद्ध देश भी कहा गया है) के मूल के या वहां से निर्यातित थियोनॉयल क्लोराइड (जिसे आगे संबद्ध वस्तु कहा गया है) के पाटन का आरोप लगाते हुए निर्दिष्ट प्राधिकारी (जिसे आगे प्राधिकारी कहा गया है) के समक्ष अधिनियम और नियमावली के अनुसार एक आवेदन प्रस्तुत किया है और संबद्ध वस्तु पर पाटनरोधी शुल्क लगाने के लिए जांच शुरू करने का अनुरोध किया है ।

2. और यतः प्राधिकारी ने आवेदकों द्वारा प्रस्तुत पर्याप्त साक्ष्य के आधार पर आरोपित पाटन की मौजूदगी, मात्रा और उसके प्रभाव की जांच करने और पाटनरोधी शुल्क की उस राशि की सिफारिश करने, जिसे यदि लागू किया जाएगा तो वहां घरेलू उद्योग को हुई क्षति समाप्त करने के लिए पर्याप्त होगी, के लिए उप नियम 5(5) के अनुसार संबद्ध देश के मूल की या वहां से निर्यातित संबद्ध वस्तु के आयातों के बारे में पाटनरोधी जांच शुरू करते हुए 23 जून, 2008 को एक सार्वजनिक सूचना जारी की, जिसे भारत के राजपत्र में प्रकाशित किया गया ।

क. प्रक्रिया

3. प्राधिकारी द्वारा उपर्युक्त जांच की शुरुआत को अधिसूचित करते हुए सार्वजनिक सूचना जारी करने के बाद इस जांच के बारे में निम्नलिखित प्रक्रिया अपनाई गई है :

- (i) प्राधिकारी ने उपर्युक्त नियम 5 के उपनियम (5) के अनुसार जांच शुरू करने से पूर्व याचिकाकर्ताओं द्वारा किए गए पाटन के आवेदन की प्राप्ति के बारे में भारत में यूरोपीय संघ के दूतावास/प्रतिनिधि को अधिसूचित किया ।
- (ii) नियम 6(2) के अनुसार नई दिल्ली स्थित संबद्ध देश के दूतावास/प्रतिनिधि को जांच की शुरुआत के बारे में सूचित किया गया था ।
- (iii) निर्दिष्ट प्राधिकारी ने कि 23 जून, 2008 की जांच शुरुआत संबंधी अधिसूचना की प्रतियां भारत में संबद्ध देश के दूतावास/प्रतिनिधि, संबद्ध देश के ज्ञात निर्यातकों, उसके पास उपलब्ध सूचना के अनुसार ज्ञात आयातकों तथा अन्य हितबद्ध पार्टियों और घरेलू उद्योग को भेजीं । इस जांच की पार्टियों से अनुरोध किया गया था कि वे निर्धारित समयावधि के भीतर प्रश्नावली का उत्तर दें और लिखित में अपने विचारों से अवगत कराएं । निर्यातक को भेजी गई याचिका और प्रश्नावली तथा पत्र की प्रतियां ज्ञात निर्यातकों/उत्पादकों की सूची के साथ संबद्ध देश के दूतावास को भी इस अनुरोध के साथ भेजी गई थीं कि वे संबद्ध देश के निर्यातकों/उत्पादकों को निर्धारित समय के भीतर प्रश्नावली का उत्तर देने की सलाह लें ।
- (iv) उपर्युक्त नियम 6(3) के अनुसार घरेलू उद्योग द्वारा दायर याचिका के अगोपनीय रूपांतरण की प्रति ज्ञात निर्यातकों और संबद्ध देश के दूतावास को उपलब्ध कराई गई थी ।
- (v) संगत सूचना मांगने के लिए नियम 6(4) के अनुसार संबद्ध देश के निम्नलिखित ज्ञात निर्यातकों को प्रश्नावलियां भेजी गई थीं :

क्र.सं.	कंपनी का नाम	देश
1.	लेक्सिस एजी	जर्मनी
2.	एन वी संगत्सर केमिकल डिस्ट्रीब्यूशन	बेल्जियम

- (vi) उपर्युक्त अधिसूचना के उत्तर में निम्नलिखित निर्यातकों ने निर्यातक प्रश्नावली के अपने उत्तर प्रस्तुत किए ।

क्र.सं.	कंपनी का नाम	देश
1.	लेक्सिस एजी (लेक्सिस एजी की नियंत्रक)	जर्मनी

(vii) नियम 6(4) के अनुसार आवश्यक सूचना मांगते हुए भारत में संबद्ध वस्तु के निम्नलिखित ज्ञात आयातकों और उपभोक्ताओं को प्रश्नावली भेजी गई थी ।

क्र.सं.	कंपनी का नाम
1.	हिंदुस्तान इन्सेक्टिसाइड्स लि.
2.	बिलाग इंड. प्रा.लि.
3.	कोरोमंडल फर्टीलाइजर्स लि.
4.	पंजाब केमिकल्स एंड क्रॉप प्रोटेक्सन लि.
5.	एक्सल क्रॉप केयर लि.
6.	घारदा केमिकल्स लि.
7.	गुजरात एग्रोकैम लि.
8.	हैरानबा इंड लि.
9.	कच्छ केमिकल इंड लि.
10.	नार्गाजुना एग्रीकैम लि.
11.	श्री पुष्कर पैट्रो प्रोडक्ट्स प्रा. लि.
12.	यूनीकैम लेबोरेटरीज लि.
13.	इसाग्रो (एशिया) एग्रो. केमिकल्स प्रा. लि.
14.	शिवा फार्मा कैम. लि.
15.	मैडीलक्स लेबोरेटरीज प्रा.लि.
16.	प्रसाद एंड कंपनी फार्माकैम लि.
17.	टैग्रोज कैमिकल्स इंडया लि.
18.	माहूर ड्राईकैम इंड लि.
19.	बोडाल कैमिकल्स
20.	नोवोडिगम लि.
21.	सुप्रिया कैमिकल्स
22.	यूनाइटेड फासफोरस लि.

(viii) इसके उत्तर में सूचना केवल मै. हिंदुस्तान इन्सेक्टिसाइड्स लि., नई दिल्ली से प्राप्त हुई है । कंपनी ने अपने उत्तर में यह उल्लेख किया है कि वे ईयू से संबद्ध वस्तु के लिए प्रतिस्पर्धी कीमत प्राप्त कर रहे हैं और संबद्ध वस्तु का उपयोग "एंडोसल्फान टैक्नीकल" नुस्खे के विनिर्माण हेतु किया जाता है और आगे यह बताया है कि ऐसे देशों, जो नुस्खों के विनिर्माण में शामिल हैं, के लिए पाटनरोधी शुल्क का लगाना उचित नहीं होगा ।

(ix) जांच अवधि सहित पिछले तीन वर्षों के लिए संबद्ध वस्तु के आयातों के व्यौरों की व्यवस्था करने के लिए वाणिज्यिक आसूचना और सांख्यिकी महानिदेशालय (डीजीसीआईएंडएस) से अनुरोध किया गया था ।

(x) प्राधिकारी ने विभिन्न हितबद्ध पार्टियों द्वारा प्रस्तुत साक्ष्य का अगोपनीय रूपांतरण सार्वजनिक फाइल के रूप में उपलब्ध किया जिसे हितबद्ध पार्टियों के निरीक्षण हेतु खुला रखा ।

(xi) उत्पादन की इष्टतम लागत के आधार पर क्षतिरहित कीमत और सामान्यतः स्वीकृत लेखा सिद्धांतों (जीएएपी) के आधार पर याचिकाकर्ताओं द्वारा प्रस्तुत सूचना के अनुसार भारत में संबद्ध वस्तु को बनाने और बेचने की लागत का निर्धारण अंतिम रूप से किया गया था ताकि यह सुनिश्चित किया जा सके कि क्या पाटन मार्जिन से कम पाटनरोधी शुल्क घरेलू उद्योग को हुई क्षति को समाप्त करने के लिए पर्याप्त होगा ।

(xii) विभिन्न हितबद्ध पार्टियों द्वारा प्रस्तुत आंकड़ों के संबंध में उनके गोपनीयता के दावों की जांच की गई है । ऐसी सूचना जिसकी प्रकृति गोपनीय है अथवा जिसे हितबद्ध पार्टियों द्वारा अगोपनीय सारांश के साथ गोपनीय आधार पर उपलब्ध कराया गया है, को गोपनीय माना गया है । *** से इस जांच परिणाम में घरेलू उद्योग द्वारा गोपनीय आधार पर प्रस्तुत सूचना का पता चलता है और प्राधिकारी ने नियमानुसार उसे गोपनीय ही माना है ।

(xiii) यह जांच 1.01.2007 से 31.12.2007 (जांच अवधि) के लिए की गई थी । क्षति विश्लेषण के संदर्भ में प्रवृत्तियों की जांच में अप्रैल, 2004-मार्च, 2005, अप्रैल, 2005-मार्च, 2006, अप्रैल, 2006-मार्च 2007 की अवधि और जांच अवधि शामिल थी ।

ख. विचाराधीन उत्पाद एवं समान वस्तु

4. वर्तमान याचिका में विचाराधीन उत्पाद थियोनायल क्लोराइड है जिसका रासायनिक सूत्र SOCL₂ है जिसे ऑक्सीक्लोराइड, सल्फ्यूरस डाई क्लोराइड, सल्फिनायल क्लोराइड, सल्फिनायल डाई क्लोराइड, डाईक्लोरोसल्फोकोसाइड आदि के नाम से भी जाना जाता है । यह सीमाशुल्क टैरिफ अधिनियम के अध्याय 28 के अंतर्गत वर्गीकृत एक कार्बनिक रसायन है । यह क्लोरीनेशन अभिक्रिया में प्रयुक्त एक अभिक्रियात्मक रसायन है । यह कक्ष तापमान में और दाब में रंगहीन, तरल, निस्तारणयोग्य है और 1400सें. से अधिक पर विघटित हो जाता है ।

5. थियोनायल क्लोराइड का उपयोग नकारात्मक सक्रिय सामग्री के रूप में लिथियम के साथ संकारात्मक सक्रिय सामग्री के तौर पर लिथियम-थियोनायल क्लोराइड बैटरियों के अंदर किया जाता है । इसका उपयोग अन्य रासायनिक यौगिकों या सामग्रियों के उत्पादन हेतु एक रीएजेंट के रूप में भी किया जाता है । सैन्य उपयोग में थियोनायल क्लोराइड का प्रयोग जी-सीरीज नर्व एजेंटों के उत्पादन की "डाई-डाई" प्रणाली में किया जाता है । इसका व्यापक उपयोग कार्बोक्सिलिक एसिडों को एसिल क्लोराइड तथा इंटरनल न्यूक्लियोफिलिक स्थानापन्न के जरिए अल्कोहल को तद्गुरूपी अल्किल क्लोराइडों में परिवर्तित करने के लिए किया जाता है ।

6. थियोनायल क्लोराइड सीमाशुल्क टैरिफ अधिनियम, 1975 के अध्याय 28, भारतीय सीमाशुल्क वर्गीकरण की उप शीर्ष सं. 28.12 (सुमेलीकृत वस्तु वर्णन तथा कोडिंग प्रणाली पर

आधारित) के अंतर्गत वर्गीकृत है। तथापि, सीमाशुल्क वर्गीकरण केवल संदर्भ प्रयोजन के लिए है और उत्पाद के क्षेत्र पर बाध्यकारी नहीं है।

7. समान वस्तु के बारे में नियम 2(घ) में निम्नानुसार उपबंध है: -

"समान वस्तु" का अर्थ एक ऐसी वस्तु है जो भारत में पाटन के लिए जांच के अधीन वस्तु के समान हो या प्रत्येक दृष्टि से उसके जैसी हो अथवा ऐसी वस्तु के अभाव में कोई अन्य ऐसी वस्तु जो यद्यपि प्रत्येक दृष्टि से समान न हो तब भी उसमें जांचाधीन वस्तु से अत्यधिक मिलती-जुलती विशेषताएं हो।

8. आवेदक ने दावा किया है कि उनके द्वारा विनिर्मित उत्पाद और संबद्ध देश से आयातित संबद्ध वस्तु के बीच ऐसा कोई ज्ञात अंतर नहीं है जिसका कीमत, उपयोग, गुणवत्ता आदि पर कोई प्रभाव पड़ सकता है। आवेदक ने यह भी दावा किया है कि उनके द्वारा और विदेशी उत्पादकों द्वारा प्रयुक्त प्रौद्योगिकी तथा प्राथमिक उत्पादन प्रक्रिया तुलनीय है। तथापि, उत्पादक उपलब्ध सुविधाओं और जरूरतों के आधार पर अपनी उत्पादन प्रक्रिया को सुसंगत बनाते हैं।

9. विचाराधीन उत्पाद या समान वस्तु के क्षेत्र के बारे में किसी हितबद्ध पार्टी से कोई तर्क प्राप्त नहीं हुआ है। आवेदक द्वारा प्रस्तुत उत्पाद एवं आयात के आंकड़ों की जांच से यह पता चलता है कि घरेलू उद्योग द्वारा उत्पादित और यूरोपीय संघ से आयातित संबद्ध वस्तु के बीच कोई अंतर नहीं है। भारतीय उद्योग द्वारा उत्पादित और संबद्ध देश से आयातित विचाराधीन उत्पाद भौतिक एवं रासायनिक विशेषताओं, विनिर्माण प्रक्रिया एवं प्रौद्योगिकी, कार्य एवं उपयोग, उत्पाद विनिर्देशन, कीमत, वितरण एवं विपणन तथा वस्तु के टैरिफ वर्गीकरण जैसी विशेषताओं के अनुसार तुलनीय है। विनिर्माण प्रक्रिया एवं प्रतिस्थापनीयता में समानता को ध्यान में रखते हुए प्राधिकारी अनंतिम रूप से यह मानते हैं कि इन दोनों को इस मामले में "विचाराधीन उत्पाद" को परिभाषित करने के प्रयोजनार्थ समान और एक ही उत्पाद मानने की जरूरत है।

ग. घरेलू उद्योग एवं आधार

10. पाटनरोधी शुल्क लगाने के लिए यह याचिका मै. ट्रांसपैक इंडस्ट्री लि. और मै. ग्वालियर कैमिकल्स इंडस्ट्रीज लि. द्वारा संयुक्त रूप से दायर की गई थी। प्राधिकारी नोट करते हैं कि तीन अन्य ऐसी कंपनियां हैं जिनके बारे में यह जाना जाता है कि उन्होंने भारत में संबद्ध वस्तु के उत्पादन के लिए क्षमताएं सृजित की हैं। ये कंपनियां हैं मै. इमारको कैमिकल्स प्रा.लि., गुजरात, मै. मीनाक्षी कैमिकल्स प्रा.लि., बड़ौदा तथा मै. श्री सल्फ्यूरिक लि., अहमदाबाद। प्राधिकारी ने इन उत्पादों की उत्पादन मात्रा और उनका समर्थन तथा याचिका में विरोध का मूल्यांकन किया है। मै. श्री सल्फ्यूरिक तथा मै. मीनाक्षी कैमिकल्स ने अपने उत्पादन की सूचना प्रदान की है तथा आवेदन का समर्थन किया है। मै. एम्बारको कैमिकल्स प्रा.लि., गुजरात ने स्पष्ट तौर पर उत्पादन बंद कर दिया है और उसने सूचना प्रदान करने के प्राधिकारी के अनुरोध का उत्तर नहीं दिया है। प्राप्त सूचना के आधार पर प्राधिकारी नोट करते हैं कि आवेदक कंपनियों का भारतीय उत्पादन में एक बड़ा हिस्सा है। अतः प्राधिकारी यह मानते हैं कि इस जांच के प्रयोजनार्थ याचिकाकर्ताओं के पास नियम 5(3) के अनुसार आधार है और वे नियम 2(ख) के अनुसार घरेलू उद्योग हैं।

11. जिन निर्यातकों, उत्पादकों, आयातकों, उपभोक्ताओं और अन्य हितबद्ध पार्टियों ने इस जांच में सूचना प्रस्तुत नहीं की है उन्हें असहयोगी हितबद्ध पार्टियां माना गया है ।

12. देश में संबद्ध वस्तु के सभी ज्ञात उत्पादकों के उत्पादन को हिसाब में लेने के बाद प्राधिकारी की राय यह है कि आवेदक का उत्पादन भारत में संबद्ध वस्तु के उत्पादन का एक बड़ा हिस्सा बनता है और उन्होंने यह माना है कि इस जांच के प्रयोजनार्थ याचिकाकर्ताओं के पास नियम 5(3) के अनुसार आधार है और वे नियम 2(ख) के अनुसार घरेलू उद्योग हैं ।

घ. न्यूनतम सीमाएं

13. वाणिज्यिक आसूचना एवं सांख्यिकी महानिदेशालय (डीजीसीआईएंडएस) तथा अन्य गौण स्रोतों एवं संबद्ध देश के सहयोगी निर्यातकों द्वारा प्रस्तुत आंकड़ों से प्राधिकारी को प्राप्त आयात आंकड़ों के अनुसार संबद्ध देश से संबद्ध वस्तु के आयात न्यूनतम स्तर से अधिक रहे हैं ।

ड. किए गए अन्य अनुरोध तथा उठाए गए मुद्दे

14. घरेलू उद्योग द्वारा निम्नलिखित मुद्दे उठाए गए हैं:

- (i) इस मामले में विचाराधीन उत्पाद थियोनाइल क्लोराइड है जिसे खुले एवं डिब्बाबंद रूप में बेचा जाता है । इन दोनों उत्पादों की कीमत में पर्याप्त अंतर को देखते हुए कीमत तुलना अलग-अलग की जाए और दोनों रूपों के लिए अलग-अलग पाटनरोधी शुल्क की सिफारिश की जाए ।
- (ii) घरेलू उद्योग द्वारा उत्पादित वस्तु आयातित वस्तु के समान वस्तु है ।
- (iii) याचिकाकर्ता कंपनियों का उत्पादन भारतीय उत्पादन के 50% से अधिक बनता है । दोनों कंपनियां नियमों के अर्थ के भीतर घरेलू उद्योग हैं ।
- (iv) यूरोप से वस्तु का निर्यात पाटित कीमत पर किया जा रहा है और इसकी पुष्टि सामान्य मूल्य तथा निर्यात कीमत के अनुमानों से होती है । दोनों फर्मों के लिए याचिकाकर्ताओं द्वारा अलग-अलग पाटन मार्जिन निर्धारित किया गया है और तत्पश्चात उन्हें विचाराधीन उत्पाद के लिए पाटनमार्जिन के निर्धारण हेतु समेकित कर दिया गया है ।
- (v) पाटित आयातों के कारण घरेलू उद्योग को वास्तविक क्षति हुई है जिसकी पुष्टि (i) पाटित आयातों की मात्रा में समग्र रूप में और भारत में उत्पादन एवं खपत की तुलना में हुई वृद्धि (ii) आयातों द्वारा घरेलू उद्योग की कीमतों में हो रही कटौती जिससे बाजार में पर्याप्त कीमतह्रास हुआ है, (iii) कीमत कटौती और आयातों में वृद्धि के परिणामस्वरूप घरेलू उद्योग के निष्पादन में उत्पादन, बिक्री, क्षमता उपयोग, लाभ/हानि, निवेश पर आय, नकद प्रवाह आदि में आई गिरावट द्वारा होती है ।

(vi) प्राधिकारी द्वारा कृपया अतिशीघ्र अंतरिम पाटनरोधी शुल्क लगाने की सिफारिश की जाए ताकि जांच के दौरान हो रहे पाटन की रोकथाम की जा सके।

15. मै. लेंगसिस एजी द्वारा निम्नलिखित मुद्दे उठाए गए हैं;

(i) भारत में थियोनाइल क्लोराइड का बाजार अत्यधिक असामान्य बाजार है जिस पर वर्ष 2007 की समाप्ति तक दो उत्पादकों का आधिपत्य था जिनका बाजार हिस्सा उनकी खुद की स्वीकारोक्ति के अनुसार 77.74% है।

(ii) दोनों उत्पादकों ने नए उत्पादक मै. श्री सल्फ्यूरिक के साथ साथ-साथ कीमत कटौती शुरू की जिन्होंने बाद में ट्रांसपैक उद्योग पर आरोप मढ़ा और यह कंपनी उत्पादन नहीं कर रही थी।

(iii) घरेलू उद्योग का बाजार हिस्सा 85.17% से घटकर 77.74% हो गया जिसे अन्य भारतीय उत्पादक अर्थात् श्री सल्फ्यूरिक ने प्राप्त कर लिया है।

(iv) ईयू से निर्यात मूल्य सीमाशुल्क के उच्च स्तर तथा घरेलू उत्पादकों के साथ सामान्य तौर पर और ग्वालियर कैमिकल्स के साथ विशेष तौर पर प्रतिस्पर्धा करने में असमर्थता के कारण स्थिर रहा है।

(v) ग्वालियर कैमिकल द्वारा प्रस्तावित कम कीमत का उद्देश्य प्रतिस्पर्धा समाप्त करना और सह-उत्पादक को भी हटाना है।

(vi) पाटनरोधी की यह प्रक्रिया ग्वालियर कैमिकल द्वारा घरेलू बाजार में एकाधिकार रखने का एक प्रयास है।

(vii) निर्यातक द्वारा कीमत कम करने और उसे बराबर लाने के लिए घरेलू उत्पादकों को बाध्य किया जा रहा है।

(viii) भारत में मांग की तुलना में क्षमता अधिक है और उत्पादकों द्वारा आगे और क्षमताएं बढ़ाई जा रही हैं।

(ix) क्षति यदि कोई हो एवं यूरोपीय संघ से निर्यातों के बीच कोई कारणात्क संबन्ध नहीं है।

(x) ग्वालियर कैमिकल्स के उत्पादन और बिक्री में वृद्धि हुई है तथा मालसूची में गिरावट आई है।

- (xi) कीमत संबंधी कुछ प्रभाव को छोड़कर जो भी ग्वालियर कैमिकल द्वारा स्वयं उत्पन्न किया गया है, आरोपित क्षति एवं पाटन के बारे में ग्वालियर कैमिकल्स की प्रकाशित वार्षिक रिपोर्ट में इस आशय का कोई उल्लेख नहीं है ।
- (xii) एक्सल क्रॉप केयर ट्रांसपैक की एक संबद्ध कंपनी है जिसे उत्पाद का आयातक माना जाता है ।
- (xiii) ट्रांसपैक ने पूर्व में लैक्सिस के एजेंट से संपर्क किया था और उत्पाद के आयात के बारे में पूछताछ की थी ।
- (xiv) लैक्सिस द्वारा निर्यातित सामग्री की गुणवत्ता अच्छी है ।
- (xv) यूरोपीय संघ से आयातों में मामूली वृद्धि हुई है ।
- (xvi) ग्वालियर कैमिकल्स को कोई क्षति नहीं हुई है और ट्रांसपैक को हुई कोई क्षति ग्वालियर कैमिकल्स के कारण हुई है ।
- (xvii) लाभ में वृद्धि पाटनरोधी आवेदन का आधार नहीं बन सकती है ।
- (xviii) निर्यातक द्वारा भारत में उत्पाद की कुल मांग में केवल 8% हिस्सा धारित नहीं किया जा सकता ।
- (xix) प्रत्येक उत्पादक के लिए क्षति की अलग-अलग जांच की जानी चाहिए न कि समेकित रूप से ।

16. वर्तमान जांच परिणाम अधिसूचित करते समय उपर्युक्त तर्कों को ध्यान में रखा गया है और उन पर इन जांच परिणामों में उचित स्थानों पर विचार किया गया है ।

प्राधिकारी द्वारा जांच

17. किए गए अनुरोधों की निम्नानुसार जांच की गई है:

18. रिकॉर्ड में उपलब्ध साक्ष्य के अनुसार मै. ग्वालियर कैमिकल्स इंडस्ट्रीज लि., नागदा तथा ट्रांसपैक इंडस्ट्रीज लि., बढौदरा का उत्पादन कुल घरेलू उत्पादन का एक बड़ा हिस्सा बनता है । इस प्रकार आवेदक पाटनरोधी निमावली के नियम 2(ख) और नियम 5(3) की अपेक्षाओं को पूरा करते हैं ।

19. अतः प्राधिकारी पाटनरोधी नियमावली के नियम 2(ख) के अर्थ के भीतर आवेदक को "घरेलू उद्योग" मानते हैं ।

20. घरेलू उद्योग द्वारा प्रस्तुत आंकड़ों के संबंध में उसके द्वारा किए गए गोपनीयता के दावों की जांच की गई है। ऐसी सूचना जिसकी प्रकृति गोपनीय है अथवा जिसे अगोपनीय सारांश के साथ गोपनीय आधार पर उपलब्ध कराया गया है, को गोपनीय माना गया है।

21. प्राधिकारी ने पाटनरोधी नियमावली के नियम 11 के अनुसार समस्त संगत तथ्यों को ध्यान में रखते हुए घरेलू उद्योग को हुई क्षति और पाटित आयातों एवं क्षति के बीच कारणात्मक संबंध का निर्धारण किया है।

च. पाटन मार्जिन का निर्धारण

22. प्राधिकारी ने संबद्ध क्षेत्र के निम्नलिखित ज्ञात निर्यातकों को निर्धारित प्रपत्र में और ढंग से सूचना उपलब्ध कराने की सलाह देते हुए प्रश्नावली भेजी :

- क) लेंक्सिस ड्यूसलैंड जीएमबीएच (लेंक्सिस एजी की नियंत्रक कंपनी)
- ख) एन वी सेपल्सर केमिकल डिस्ट्रीब्यूशन

23. लेंक्सिस ने प्राधिकारी को उत्तर दिया है और विस्तृत प्रश्नावली का उत्तर और अनुरोध प्रदान किए हैं। अपने अनुरोधों में निर्यातक ने पाटन एवं क्षति मार्जिन के निर्धारण हेतु निम्नलिखित मुद्दे उठाए हैं:

- (i) सामान्य मूल्य का निर्धारण घरेलू बाजार में बिक्री के अनुसार नहीं किया जा सकता क्योंकि यूरोपीय संघ एक असामान्य बाजार है जबकि भारत एक बड़ा बाजार है। यूरोपीय संघ में घरेलू कीमतें विकृत और अप्रयोज्य हैं।
- (ii) उत्पादन प्रक्रिया में अंतर है। लेंक्सिस के पास सतत प्रक्रिया है और वह पाइपलाइन के जरिए तरल सल्फर प्राप्त करता है जबकि भारतीय उत्पादकों के पास सतत प्रक्रिया नहीं है और वे शुष्क सल्फर प्राप्त कर रहे हैं तथा अतिरिक्त भाड़ा लागत उठा रहे हैं।
- (iii) यूरोपीय संघ में घरेलू कीमत की तुलना उत्पादन लागत के साथ करने की जरूरत नहीं है।
- (iv) घरेलू उद्योग ने लागत अनुमानों के अनुसार सामान्य मूल्य निर्धारित किया है जिसके ब्यापारों का खुलासा नहीं किया गया है।
- (v) लेंक्सिस द्वारा अग्रिम लाइसेंस पर भारत को अपने 80% निर्यातों की बिक्री की जा रही है। चूंकि इसके अधिकांश निर्यात अग्रिम लाइसेंस पर होते हैं इसलिए निर्यात कीमत में शुल्क प्रति अदायगी समायोजित की जानी चाहिए।

24. चूंकि लेंक्सिस ने प्राधिकारी को उत्तर दिया है इसलिए लेंक्सिस के संबंध में अलग पाटन मार्जिन निर्धारित किया गया है।

च.1 बाजार अर्थव्यवस्था के दावों की जांच

25. यूरोपीय संघ बाजार अर्थव्यवस्था के क्षेत्र में होने के कारण नियमावली के अनुबंध-1 के पैरा 8 के अनुसार गैर-बाजार अर्थव्यवस्था के अनुमानों के संबंध में प्रक्रियागत औपचारिकताएं नहीं की गई थीं ।

प्राधिकारी द्वारा जांच

26. निर्दिष्ट प्राधिकारी द्वारा शुरू की गई पाटनरोधी जांच के उत्तर में लेंक्सिस ने प्रश्नावली का उत्तर दायर किया है जिसकी जांच से यह पता चला कि इसमें कमी थी। इन कमियों के बारे में निर्यातक को बताया गया था तथा कुछ अतिरिक्त सूचना भी मांगी गई थी । निर्यातक ने कमी के पत्र का भी जवाब दिया था । तथापि, प्रपत्र में और ढंग से पूर्ण सूचना प्रदान नहीं की गई है । निर्यातक ने खास तौर पर उत्पादन लागत से संबंधित प्रमुख सूचना प्रदान नहीं की है । अतः प्रारंभिक जांच परिणामों के प्रयोजनार्थ निर्यातक की सर्वोत्तम उपलब्ध सूचना को ध्यान में रखा गया है ।

च.2 सामान्य मूल्य का निर्धारण

लेंक्सिस तथा अन्य असहयोगी निर्यातकों के मामले में सामान्य मूल्य

27. जहां तक लेंक्सिस के इस तर्क का संबंध है कि सामान्य मूल्य का निर्धारण ईयू में घरेलू कीमत के आधार पर नहीं किया जाना चाहिए, प्राधिकारी नोट करते हैं कि नियमों में सामान्य मूल्य के निर्धारण हेतु अपनाई जाने वाली पद्धति का प्रावधान है और उसमें निर्यातक द्वारा उल्लिखित किसी स्थिति का उल्लेख नहीं है जिसकी वजह से घरेलू बाजार में कीमत की अनदेखी करना अपेक्षित हो । वस्तुतः निर्धारित पद्धति में ऐसे क्रम का प्रावधान है जिसमें सामान्य मूल्य का निर्धारण किया जाना चाहिए । ऐसी किसी स्थिति में जहां निर्यातक ने प्रतिनिधिक व्यवहार्य घरेलू बिक्री की है, वहां सामान्य मूल्य के निर्धारण का एकमात्र विकल्प घरेलू बाजार में कीमत है । नियमों में ऐसे कुछ कारकों की सूची भी है जिनका कीमत तुलनीयता पर प्रभाव पड़ता है । और उनमें एक ऐसे अन्य कारक का भी प्रावधान है जिन्हें कीमत तुलनीयता प्रभावित करने के लिए प्रदर्शित किया जाता है । निर्यात ने ऐसे किसी कारक को अभिज्ञात कर उसकी मात्रा का अनुमान नहीं लगाया है जिसे कीमत तुलनीयता प्रभावित करने के लिए प्रदर्शित किया गया हो । इस बात को ध्यान में रखते हुए प्राधिकारी यह मानते हैं कि ईयू में सामान्य मूल्य को ईयू में घरेलू बाजार में कीमत के आधार पर निर्धारित करना अपेक्षित है ।

28. निर्यातक द्वारा प्रदत्त सूचना का उस अवधि के लिए विश्लेषण किया गया था जिस अवधि के लिए सूचना उपलब्ध कराई गई थी और उससे निम्नानुसार पता चलता है :-

(यूरो/मी.ट.)

	2005	2006	2007
मल्टी पोतलदान			
	***	***	***
घरेलू बाजार	***	***	***
भारत को निर्यात	***	***	***
तीसरे देशों को निर्यात	***	***	***
डिब्बाबंद पोतलदान			
	***	***	***
घरेलू बाजार	***	***	***
भारत को निर्यात	***	***	***
तीसरे देशों को निर्यात	***	***	***

29. प्राधिकारी नोट करते हैं कि जहां घरेलू बाजार में निर्यातक की कीमत अत्यधिक स्थिर रही थी, वहीं भारत एवं तीसरे देशों के लिए उसकी निर्यात कीमत में तेजी से गिरावट आई ।

30. कंपनी ने उत्पाद के खुले एवं डिब्बाबंद रूप के संबंध में इकाई कीमत की अलग सूचना उपलब्ध कराई है । कंपनी ने भारतीय बाजार में दोनों रूपों का निर्यात किया है । उत्पाद के खुले एवं डिब्बाबंद रूप में पर्याप्त कीमत और लागत अंतर को देखते हुए प्राधिकारी ने केवल तुलना के प्रयोजनार्थ दोनों रूपों के लिए अलग-अलग सामान्य मूल्य निर्धारित किया है और पाटन मार्जिन की गणना हेतु भारत औसत आधार पर संबद्ध वस्तु का एक ही सामान्य मूल्य निर्धारित किया है । पैकिंग, भाड़ा एवं हैंडलिंग प्रभारों के लिए कीमत समायोजनों का दावा किया गया है जिनकी अनंतिम रूप से अनुमति आगे जांच लंबित रहने तक प्रदान की गई है । चूंकि घरेलू बिक्री से संबंधी सूचना यूरो में है, इसलिए प्राधिकारी ने यूरो में सामान्य मूल्य, निर्यात कीमत तथा पाटन मार्जिन निर्धारित किया है । निर्यातक द्वारा प्रदत्त आंकड़ों के अनुसार इस आधार पर सामान्य मूल्य खुले रूप के लिए *** यूरो तथा डिब्बा बंद थियोनाइल क्लोराइड के लिए *** यूरो बनता है और भारत औसत आधार पर इसे *** यूरो निर्धारित किया गया है ।

च.3 निर्यात कीमत

31. जांच अवधि के दौरान, लेंक्सिस ने *** सौदों के जरिए भारत को *** मी टन संबद्ध वस्तु का निर्यात किया है । इसमें से *** मी टन खुले रूप में और *** मी टन डिब्बाबंद रूप में था । निर्यात कीमत का निर्धारण समस्त निर्यात सौदों को ध्यान में रखते हुए और खुले एवं डिब्बाबंद रूपों के

लिए अलग-अलग किया गया है । पैकिंग, अंतरदेशीय भाड़े, हैंडलिंग एवं विदेशी भाड़े के लिए कीमत समायोजनों का दावा किया गया है जिनकी अनंतिम रूप से अनुमति आगे जांच लंबित रहने तक प्रदान की गई है । चूंकि घरेलू बिक्री संबंधी सूचना यूरो में है इसलिए प्राधिकारी ने निर्यात कीमत भी यूरो में निर्धारित की है । निर्यातक ने एक यूरो = 57.01 भा.रु. की औसत विनिमय दर का दावा किया है जिसे वर्तमान प्रारंभिक निर्धारण के प्रयोजनार्थ स्वीकार किया गया है । इस आधार पर सामान्य मूल्य खुले रूप के लिए *** यूरो तथा डिब्बा बंद रूप के लिए *** यूरो बनता है और भारित औसत आधार पर इसे *** यूरो निर्धारित किया गया है ।

च.4 पाटन मार्जिन

लैंक्सिस तथा अन्य असहयोगी निर्यातकों के मामले में पाटन मार्जिन

32. ऊपर किए गए उल्लेख के अनुसार निर्धारित सामान्य मूल्य और निर्यात कीमत पर विचार करने के बाद प्राधिकारी ने निर्यातों की संबद्ध मात्रा पर विचार करते हुए भारित औसत पाटन मार्जिन निर्धारित किया है ।

33. प्राधिकारी नोट करते हैं कि केवल लैंक्सिस ने प्राधिकारी को उत्तर दिया है और प्रश्नावली का उत्तर उपलब्ध कराया है । ईयू के किसी निर्यातक ने प्राधिकारी को उत्तर नहीं दिया है । अन्य असहयोगी निर्यातकों के मामले में सामान्य मूल्य का निर्धारण उसी स्तर पर किया गया है जैसा कि यह लैंक्सिस के मामले में निर्धारित किया गया है । असहयोगी निर्यातकों के मामले में कारखाना निर्यात कीमत का निर्धारण खुले एवं डिब्बाबंद दोनों रूपों के लिए अलग-अलग कमतर निर्यात मूल्य पर विचार करने के बाद किया गया है । अतः ईयू के अन्य निर्यातकों के मामले में पृथक निवल निर्यात कीमत निर्धारित की गई है ।

(यूरो/मी.ट.)

	लैंक्सिस			अन्य		
	खुला	डिब्बा बंद	भारित औसत	खुला	डिब्बा बंद	भारित औसत
सामान्य मूल्य						
कारखाना कीमत	***	***	***	***	***	***
निर्यात कीमत						
निवल-कारखाना कीमत	***	***	***	***	***	***
पाटन मार्जिन राशि	***	***	***	***	***	***
पाटन मार्जिन %	200-215	285-310	225-235	340-350	540-550	380-390

छ. क्षति निर्धारण**क्षति एवं कारणात्मक संबंध**

34. प्राधिकारी ने नोट किया है कि डब्ल्यूटीओ करार के अनुच्छेद 3.1 और नियमावली के अनुबंध-II में इन दोनों की वस्तुनिष्ठ जांच की व्यवस्था है, (क) पाटित आयातों की मात्रा और घरेलू बाजार में समान उत्पाद की कीमतों पर पाटित आयातों का प्रभाव; और (ख) पाटित आयातों के मात्रात्मक प्रभाव के संबंध में ऐसे उत्पादों के घरेलू उत्पादकों पर इन आयातों का परिणामी प्रभाव ताकि इस बात की जांच की जा सके कि क्या आयातों में समग्र रूप से अथवा आयातक सदस्य के उत्पादन अथवा खपत की दृष्टि से भारी वृद्धि हुई है। जहां तक पाटित आयातों के मात्रात्मक प्रभाव का संबंध है, प्राधिकारी के लिए इस बात की जांच करना अपेक्षित है कि क्या पाटित आयातों में समग्र रूप में या भारत में उत्पादन या खपत की तुलना में पर्याप्त वृद्धि हुई है। पाटित आयातों के कीमत प्रभाव के संबंध में प्राधिकारी के लिए यह जांच करना अपेक्षित है कि क्या भारत में समान उत्पाद की कीमत की तुलना में पाटित आयातों द्वारा भारी कीमत कटौती की गई है या क्या ऐसे आयातों का प्रभाव अन्यथा कीमतों में महत्वपूर्ण स्तर तक कमी करना है या ऐसी कीमत वृद्धि को रोकना है जो अन्यथा काफी मात्रा में बढ़ गई होती।

35. घरेलू उद्योग पर पाटित आयातों के प्रभाव के बारे में पाटनरोधी नियमावली के अनुबंध-II के पैरा-(IV) में निम्नानुसार उल्लेख है।

"संबंधित घरेलू उद्योग पर पाटित आयातों के प्रभाव की जांच में बिक्री, लाभ, उत्पादन, बाजार हिस्सा, उत्पादकता, निवेश पर आय अथवा क्षमता उपयोग में स्वाभाविक और संभावित गिरावट सहित घरेलू उद्योग की स्थिति पर प्रभाव डालने वाले समस्त संगत आर्थिक कारकों और संकेतकों; घरेलू कीमत, पाटन मार्जिन की मात्रा को प्रभावित करने वाले कारकों; नकद प्रभाव, मालसूची, रोजगार, मजदूरी, वृद्धि, पूंजी निवेश जुटाने की क्षमता पर वास्तविक और संभावित ऋणात्मक प्रभावों का मूल्यांकन शामिल होगा।"

36. प्राधिकारी ने क्षति की जांच के बारे में हितबद्ध पार्टियों के तर्कों को नोट किया है और उठाए गए मुद्दों पर उचित स्थानों पर विचार किया है। प्राधिकारी ने तथ्यों और हितबद्ध पार्टियों के तर्कों को ध्यान में रखते हुए क्षति मापदंडों की तथ्यपरक जांच की है।

घरेलू उद्योग के विचार

37. घरेलू उद्योग ने यह दावा करने के लिए निम्नलिखित अनुरोध किया है कि उन्हें यूरोपीय संघ से पाटन के कारण वास्तविक क्षति हुई है।

- (i) उत्पादन एवं बिक्री के संबंध में घरेलू उद्योग के निष्पादन में सुधार हुआ है। तथापि, क्षमता उपयोग इष्टतम स्तर पर नहीं हुआ था।

- (ii) आयातित और घरेलू उत्पाद के बीच कीमत अंतर है । इसके प्रत्यक्ष परिणामस्वरूप घरेलू उद्योग कीमतें कम करने के लिए बाध्य हुआ है ।
- (iii) आयातों की पहुंच कीमत बल्क उत्पाद को छोड़कर समूचे आधार वर्ष में घरेलू उद्योग की बिक्री कीमत से कम रही हैं । आयातों से समूची क्षति अवधि के दौरान घरेलू उद्योग की कीमतों में कटौती हुई है ।
- (iv) घरेलू उद्योग की बिक्री कीमतों में तेजी से गिरावट आई है । इस प्रकार आयातों द्वारा बाजार में पर्याप्त कीमत हास हो रहा है ।
- (v) परिणामतः घरेलू उद्योग के प्रति इकाई लाभ में गिरावट आने के कारण आयातों से घरेलू उद्योग के निष्पादन में गिरावट आई है ।
- (vi) निवेश पर आय में भारी गिरावट आई है । इस प्रकार निवेश पर आय में गिरावट प्रत्यक्षतः बिक्री कीमत में गिरावट के कारण आई जिसमें आयात कीमतों में गिरावट के कारण और वृद्धि हुई ।
- (vii) संबद्ध वस्तु के बाजार में पर्याप्त वृद्धि हुई है और ईयू से हुए आयात का भारत में कुल खपत में एक बड़ा बाजार हिस्सा रहा है ।
- (viii) आयातों में समग्र रूप में पर्याप्त वृद्धि हुई है । इसके प्रत्यक्ष परिणामस्वरूप संबद्ध आयातों का बाजार हिस्सा बढ़ा है और घरेलू उद्योग का घटा है ।
- (ix) उत्पाद की बिक्री खुले और डिब्बा बंद रूप में की जाती है तथा पैकिंग लागत काफी अधिक होती है । अतः औसत आंकड़ों पर विचार करने से सही स्थिति का पता नहीं चलेगा ।

प्राधिकारी द्वारा जांच

38. यूरोपीय संघ से पाटित आयातों द्वारा घरेलू उद्योग को हुई आरोपित क्षति के संबंध में प्राधिकारी के समक्ष निम्नलिखित अनिवार्य तथ्य हैं जो प्राधिकारी द्वारा प्रारंभिक निर्धारण का आधार बनेंगे ।

39. यूरोपीय संघ से पाटन की मात्रा और सीमा की जांच करने के बाद प्राधिकारी ने घरेलू उद्योग को क्षति, यदि कोई हो, तथा पाटित आयातों और घरेलू उद्योग को हुई क्षति के बीच कारणात्मक संबंध की जांच की है । प्राधिकारी मानते हैं कि आवेदक कंपनियों का जांच अवधि के दौरान पाटनरोधी नियमावली के नियम 2(ख) के अंतर्गत संबद्ध वस्तु के भारतीय उत्पादन का एक बड़ा हिस्सा बनता है । अतः क्षति निर्धारण के प्रयोजनार्थ आवेदक कंपनी को नियमों के अर्थ के भीतर घरेलू उद्योग का भाग माना गया है ।

40. रिलायंस इंडस्ट्रीज बनाम निर्दिष्ट प्राधिकारी के मामले में माननीय न्यायालय के निर्णय की मूल भावना के अनुसार संबद्ध वस्तु के समस्त ज्ञात उत्पादकों से अनुरोध किया गया है कि वे क्षति निर्धारण और समग्र घरेलू उद्योग के लिए क्षतिरहित कीमत के निर्धारण के प्रयोजनार्थ अपनी लागत एवं क्षति संबंधी सूचना दायर करें । तथापि, इन उत्पादकों ने अब तक कोई संगत सूचना दायर नहीं की है । अतः प्रारंभिक निर्धारण के प्रयोजनार्थ नियम 2(ख) में यथापरिभाषित घरेलू उद्योग के रूप में आवेदक घरेलू उत्पादक की लागत एवं क्षति संबंधी सूचना की जांच की गई है ।

41. अनुबंध-II के साथ पठित पाटनरोधी नियमावली के नियम-11 में यह उपबंध है कि किसी क्षति निर्धारण में "... पाटित आयातों की मात्रा, समान वस्तु के घरेलू बाजार में कीमतों पर उसके प्रभाव और ऐसी वस्तुओं के घरेलू उत्पादकों पर ऐसे आयातों के परिणामी प्रभाव सहित समस्त संगत तथ्यों को ध्यान में रखते हुए ..." घरेलू उद्योग को हुई क्षति का संकेत देने वाले कारकों की जांच शामिल होगी। पाटित आयातों के कीमत प्रभाव पर विचार करते समय इस बात पर विचार करना आवश्यक होता है कि क्या भारत में समान उत्पाद की कीमत की तुलना में पाटित आयातों द्वारा भारी कीमत कटौती की गई है या क्या ऐसे आयातों का प्रभाव अन्यथा कीमतों में महत्वपूर्ण स्तर तक कमी करना है या ऐसी कीमत वृद्धि को रोकना है जो अन्यथा काफी मात्रा में बढ़ गई होती।

42. भारत में घरेलू उद्योग पर पाटित आयातों के प्रभाव की जांच करने के लिए घरेलू उद्योग की स्थिति पर प्रभाव डालने वाले उत्पादन, क्षमता उपयोग, बिक्री मात्रा, स्टॉक, लाभप्रदता, निवल बिक्री प्राप्ति, पाटन की मात्रा और मार्जिन आदि जैसे संकेतकों पर उपर्युक्त नियमावली के अनुबंध-II के अनुसार विचार किया गया है।

43. उत्पादन, क्षमता उपयोग, बिक्री मात्रा आदि जैसे उपर्युक्त घरेलू उद्योग को प्रभावित करने वाले समस्त आर्थिक मापदंडों की निम्नानुसार जांच की गई है :

छ.1 पाटित आयातों का मात्रात्मक प्रभाव: आयात की मात्रा और बाजार हिस्सा

(क) मात्रात्मक प्रभाव: पाटित आयातों का मात्रात्मक प्रभाव और घरेलू उद्योग पर प्रभाव

पाटित आयातों की मात्रा और बाजार हिस्सा

44. डीजीसीआईएंडएस के आंकड़ों के अनुसार संबद्ध क्षेत्र और अन्य देशों से आयात की मात्रा निम्नानुसार रही है:-

आयात मी.ट. में	इकाई	2004-05	2005-06	2006-07	जांच अवधि
यूरोपीय संघ	मी.ट.	1930	4459	3136	3717
प्रवृत्ति	सूचीबद्ध	100	231	162	193
अन्य देश	मी.ट.	1536	1013	0	0
कुल आयात	मी.ट.	3417	5471	3136	3717
आयातों में बाजार हिस्सा					
यूरोपीय संघ	%	56.48	81.50	100.00	100.00
अन्य देश	%	43.52	18.50	0.00	0.00

यह देखा गया है कि आयात में वर्ष 2004-05 से 2005-06 तक समग्र रूप में वृद्धि हुई है तत्पश्चात वर्ष 2006-07 में गिरावट आई है और जांच अवधि में पुनः वृद्धि हुई है। जांच अवधि में आयात वर्ष 2004-05 में हुए आयात की मात्रा से लगभग दोगुने रहे थे। यह भी नोट किया जाता है कि जहां ईयू का हिस्सा वर्ष 2004-05 में लगभग 56% था, वहीं वर्ष 2006-07 और जांच अवधि में यह बढ़कर 100% हो गया।

मांग का निर्धारण

45. प्राधिकारी ने वर्तमान जांच के प्रयोजनार्थ भारत में उत्पाद की मांग या प्रत्यक्ष खपत को भारतीय उत्पादकों की घरेलू बिक्री तथा समस्त स्रोतों से हुए आयातों की राशि के रूप में लिया है। इस प्रकार निर्धारित मांग निम्नलिखित तालिका में दी गई है :-

मांग	इकाई	2004-05	2005-06	2006-07	जांच अवधि
बिक्री- घरेलू उद्योग	मी.ट.	***	***	***	***
बिक्री- अन्य उत्पादक	मी.ट.	***	***	***	***
आयात - यूरोपीय संघ	मी.ट.	1930	4459	3136	3717
आयात - अन्य देश	मी.ट.	1536	1013	0	0
कुल आयात	मी.ट.	3417	5471	3136	3717
मांग	मी.ट.	***	***	***	***
प्रवृत्ति	सूचीबद्ध	100	113	119	147

यह देखा गया है कि विचाराधीन उत्पाद की मांग में सतत वृद्धि प्रदर्शित हुई है।

मांग में बाजार हिस्सा

46. विभिन्न स्रोतों से आयात और भारतीय उत्पादकों की बिक्री पर विचार करते हुए भारत में मांग में संबद्ध क्षेत्र का बाजार हिस्सा निम्नलिखित तालिका के अनुसार बनता है :-

मांग	इकाई	2004-05	2005-06	2006-07	जांच अवधि
घरेलू उद्योग	%	88.01	84.41	85.96	79.82
अन्य भारतीय उत्पादक	%	2.72	2.41	6.86	13.31

यूरोपीय संघ	%	5.24	10.74	7.18	6.87
अन्य देश	%	4.03	2.44	0.00	0.00

यह देखा गया है कि यूरोपीय संघ के लिए मांग में पाटित आयातों का बाजार हिस्सा आधार वर्ष में 5.24% से बढ़कर जांच अवधि में 6.87% हो गया जबकि घरेलू उद्योग का बाजार हिस्सा इसी अवधि के दौरान *** से घटकर *** हो गया। यह भी देखा गया है कि अन्य भारतीय उत्पादकों के बाजार हिस्से में भी इसी अवधि में पर्याप्त वृद्धि हुई है। आकड़ों से यह देखा जा सकता है कि अन्य देशों के आयात के हिस्से में ई यू के संबंध में वृद्धि हुई है और घरेलू उद्योग के हिस्से में गिरावट अन्य घरेलू उत्पादकों की वजह से आई है और वस्तुतः अन्य घरेलू उत्पादकों ने ***% बाजार हिस्सा प्राप्त किया है जबकि ई यू का बाजार हिस्सा 4.5% रहा है। घरेलू बाजार की मांग में उनका संवर्धित हिस्सा लाभ मार्जिन में कटौती की लागत पर भी कीमत कम करके बाजार में बने रहने के निराशाजनक प्रयास के कारण रहा है। तथापि, इस प्रारंभिक चरण पर विस्तृत तथ्यों के अभाव में कोई सकारात्मक निष्कर्ष नहीं लिया जा सकता और इस पर जांच के दौरान निर्णय लिया जाएगा।

उत्पादन के संबंध में पाटित आयातों का हिस्सा:

47. प्राधिकारी ने यह पाया है कि संबद्ध देशों से पाटित आयातों में घरेलू उद्योग के उत्पादन के संबंध में वृद्धि हुई है जैसा कि निम्नलिखित तालिका से देखा जाता है :

		2004-05	2005-06	2006-07	जांच अवधि
ई यू से आयात	मी.ट.	1930	4459	3136	3717
घरेलू उद्योग का उत्पादन	मी.ट.	***	***	***	***
घ. उ. के उत्पादन के संबंध में आयात	%	***	***	***	***

क्षमता तथा क्षमता उपयोग

48. क्षति अवधि के दौरान घरेलू उद्योग की क्षमता और क्षमता उपयोग का ब्यौरा निम्नलिखित तालिका में दिया गया है:-

	इकाई	2004-05	2005-06	2006-07	जांच अवधि
क्षमता मी.ट.	मी.ट.	***	***	***	***
क्षमता उपयोग %	%	82.71	71.66	68.26	78.08

यह देखा गया है कि घरेलू उद्योग की क्षमता में 2005-06 और उसके बाद 2006-07 में वृद्धि हुई है। क्षमता उपयोग में वर्ष 2004-05 से 2006-07 तक गिरावट आई है जो आंशिक रूप से जोड़ी जा रही नई क्षमताओं के कारण हो सकती है। तथापि, तत्काल पूर्ववर्ती वर्षों की तुलना में जांच अवधि के दौरान संवर्धित क्षमता उपयोग में आधार वर्ष की तुलना में मामूली गिरावट आई है। जांच अवधि के दौरान क्षमता उपयोग में आई गिरावट से यह पता चलता है कि घरेलू उद्योग द्वारा संवर्धित क्षमता का उपयोग नहीं किया जा सकता।

उत्पादन

49. घरेलू उद्योग का उत्पादन निम्नलिखित तालिका में दिया गया है:-

	इकाई	2004-05	2005-06	2006-07	जांच अवधि
उत्पादन मी.ट.	मी.ट.	***	***	***	***
प्रवृत्ति		100	107	116	133
मांग	मी.ट.	36,825	41515	43708	54109
प्रवृत्ति		100	113	119	147
मांग की तुलना में उत्पादन	%	***	***	***	***

यह देखा गया है कि घरेलू उद्योग के उत्पादन में सकारात्मक प्रवृत्ति देखी गई है। तथापि, जहां क्षति अवधि में मांग में 47% की वृद्धि हुई वहीं घरेलू उद्योग के उत्पादन में केवल 33% की वृद्धि हुई और क्षमता उपयोग में गिरावट आई। अतः यह देखा जाता है कि यद्यपि उत्पादन में समग्र रूप में वृद्धि हुई है तथापि, भारत में मांग की तुलना में इसमें गिरावट आई है।

बिक्री

50. घ.उ. की बिक्री मात्रा निम्नलिखित तालिका में दी गई है:

	इकाई	2004-05	2005-06	2006-07	जांच अवधि
बिक्री मी.ट.	मी.ट.	***	***	***	***
प्रवृत्ति		100	108	116	133
मांग	मी.ट.	36,825	41515	43708	54109
प्रवृत्ति		100	113	119	147

मांग में घरेलू उद्योग का बाजार हिस्सा	%	***	***	***	***
---------------------------------------	---	-----	-----	-----	-----

यह देखा जाता है कि घरेलू उद्योग की बिक्री में समग्र वृद्धि हुई है। तथापि, बिक्री मात्रा में यह वृद्धि मांग में हुई वृद्धि से कम रही है। इसके अलावा, बिक्री एवं उत्पादन में वृद्धि समान स्तर पर रही है।

51. चूंकि आयात की मात्रा खंडवार उपलब्ध है, इसलिए प्राधिकारी ने खंडवार आधार पर भी घरेलू उद्योग की बिक्री मात्रा की जांच की है। निम्नलिखित तालिका से वास्तविक स्थिति का पता चलता है।

	इकाई	2004-05	2005-06	2006-07	जांच अवधि
कुल बिक्री	मी.ट.	***	***	***	***
प्रवृत्ति	सूचकांक	100	108	116	133
खुला	मी.ट.	***	***	***	***
प्रवृत्ति	सूचकांक	100	105	110	127
डिब्बाबंद	मी.ट.	***	***	***	***
प्रवृत्ति	सूचकांक	100	108	120	115
आबद्ध	मी.ट.	***	***	***	***
ई यू से आयात	मी.ट.				
खुला	मी.ट.	270	833	1015	2121
प्रवृत्ति	सूचकांक	100	307	374	783
डिब्बाबंद	मी.ट.	1660	3626	2121	1595
प्रवृत्ति	सूचकांक	100	218	128	96

उपर्युक्त से प्राधिकारी यह नोट करते हैं कि जहां खुले रूप में घरेलू उद्योग की बिक्री मात्रा में लगातार वृद्धि हुई है वहीं ई यू से हुए आयातों में भी इतनी ही वृद्धि हुई है। तथापि, उत्पाद के डिब्बाबंद रूप के मामले में आयात की मात्रा में वर्ष 2005-06 के दौरान पर्याप्त वृद्धि हुई और उसके बाद वर्ष 2006-07 तथा जांच अवधि के दौरान गिरावट आई। इसके विपरीत जांच अवधि को छोड़कर घरेलू उद्योग की डिब्बाबंद बिक्री में सतत वृद्धि हुई।

ख) घरेलू उद्योग पर पाटित आयातों का कीमत प्रभाव

52. घरेलू उद्योग की कीमतों पर पाटित आयातों के प्रभाव की जांच कीमत कटौती, कम कीमत पर बिक्री, कीमत ह्रास और कीमत न्यूनीकरण, यदि कोई हो के संदर्भ में की गई है। इस विश्लेषण के प्रयोजनार्थ घरेलू उद्योग की भारित औसत उत्पादन लागत, भारित औसत निवल बिक्री प्राप्ति तथा क्षतिरहित कीमत की तुलना संबद्ध देश से हुए आयातों की पहुंच लागत के साथ की गई है।

53. भारत में विचाराधीन उत्पाद की बिक्री दो रूपों-खुले (जिसे बल्क भी कहा जाता है) और डिब्बाबंद रूप में की जाती है। यह नोट किया जाता है कि पैकिंग लागत उत्पादन लागत की एक बड़ा भाग होती है। तथापि, खुले रूप की दुलाई विशिष्ट टैंकरों में की जाती है और उत्पाद के अत्यधिक खतरनाक स्वरूप को देखते हुए उसकी हैंडलिंग और दुलाई में अतिरिक्त सावधानी अपेक्षित होती है। उत्पाद के खुले एवं डिब्बाबंद रूप के बीच कीमत में पर्याप्त अंतर को देखते हुए प्राधिकारी ने घरेलू बिक्री कीमत की तुलना निर्यातक द्वारा घोषित कुल आयातों के आधार पर संगणित पहुंच मूल्य के साथ उत्पाद के बल्क एवं डिब्बाबंद रूप के लिए अलग-अलग की गई है। निवल बिक्री प्राप्ति की गणना समस्त रिबेटों और करों को घटाने के बाद की गई है। आयातों के पहुंच मूल्य की गणना 1% हैंडलिंग प्रभार और मूल सीमाशुल्क को संबद्ध आयातों के सीआईएफ मूल्य में जोड़ने के बाद की गई है। निर्यातक तथा घरेलू उद्योग की पैकिंग लागत में भारी अंतर पाया गया है। अतः समस्त डिब्बाबंद वस्तु के कीमत कटौती के प्रयोजनार्थ पैकिंग लागत को डिब्बाबंद वस्तु की निवल बिक्री प्राप्ति और निर्यातक की डिब्बाबंद सामग्री की पहुंच लागत में से घटा दिया गया है। आयातों के पहुंच मूल्य की तुलना घरेलू उद्योग की निवल बिक्री प्राप्ति के साथ की गई है और यह पाया गया है कि घरेलू उद्योग की कीमत में पाटित आयातों द्वारा निम्नानुसार कटौती की गई है :

	इकाई	निर्यातक आंकड़ों के अनुसार
कुल आयातों की सीआईएफ कीमत		
➤ खुला	रु./मी.ट.	***
➤ डिब्बाबंद	रु./मी.ट.	***
आयातों की पहुंच कीमत		
➤ खुला	रु./मी.ट.	***
➤ डिब्बाबंद	रु./मी.ट.	***
➤ औसत	रु./मी.ट.	***
निवल बिक्री प्राप्ति		
➤ खुला	रु./मी.ट.	***

➤ डिब्बाबंद	रु./मी.ट.	***
➤ औसत	रु./मी.ट.	***
कीमत कटीती		
➤ खुला	रु./मी.ट.	***
➤ डिब्बाबंद	रु./मी.ट.	***
➤ औसत	रु./मी.ट.	***
कीमत कटीती %		
➤ खुला	%	5-10
➤ डिब्बाबंद	%	80-90
➤ औसत	%	10-20

कम कीमत पर बिक्री

54. प्राधिकारी नोट करते हैं कि कम कीमत पर बिक्री क्षति के निर्धारण का एक प्रमुख संकेतक है। क्षतिरहित कीमत की गणना कर उसकी तुलना संबद्ध वस्तु के पहुंच मूल्य के साथ की गई है ताकि कम कीमत पर बिक्री की मात्रा का आकलन किया जा सके। घरेलू उद्योग के लिए क्षतिरहित कीमत का मूल्यांकन प्राधिकारी द्वारा अपनाई गई पद्धति के अनुसार जांच अवधि के दौरान विचाराधीन उत्पादन की उत्पादन लागत को ध्यान में रखते हुए और उच्चतम न्यायालय के निर्णय को भी देखते हुए किया गया है। क्षतिरहित कीमत का निर्धारण उत्पाद के खुले एवं डिब्बाबंद रूप के लिए अलग-अलग किया गया है।

55. जांच अवधि के आंकड़ों के विश्लेषण से यह पता चलता है कि संबद्ध आयातों का पहुंच मूल्य निर्धारित क्षतिरहित कीमत से काफी कम रहा है। निर्यातक एवं घरेलू उद्योग की पैकिंग लागत में भारी अंतर पाया गया है। अतः डिब्बाबंद वस्तु की कम कीमत पर बिक्री की गणना के प्रयोजनार्थ पैकिंग लागत को निर्यातक की डिब्बाबंद वस्तु की क्षतिरहित कीमत और डिब्बाबंद सामग्री की पहुंच लागत से हटा दिया गया है।

	इकाई	निर्यातक के आंकड़ों के अनुसार
आयातों की पहुंच कीमत		
➤ खुला	रु./मी.ट.	***
➤ डिब्बाबंद	रु./मी.ट.	***
➤ भारित औसत	रु./मी.ट.	***

प्रतिरहित कीमत		
➤ खुला	रु./मी.ट.	***
➤ डिब्बाबंद	रु./मी.ट.	***
➤ भारित औसत	रु./मी.ट.	***
कम कीमत पर बिक्री		
➤ खुला	रु./मी.ट.	***
➤ डिब्बाबंद	रु./मी.ट.	***
➤ भारित औसत	रु./मी.ट.	***
कम कीमत पर बिक्री %		
➤ खुला	%	1-10
➤ डिब्बाबंद	%	30-40
➤ भारित औसत	%	1-15

कीमतहास /न्यूनीकरण

56. प्राधिकारी ने यह जांच की है कि पाटित आयातों के प्रभाव से भारत में समान वस्तु की कीमत का हास हुआ है अथवा उस वृद्धि में रूकावट आई है जो अन्यथा काफी हद तक हो गई होती। इस प्रयोजनार्थ प्राधिकारी ने बनाने एवं बेचने की लागत की प्रवृत्तियों की जांच की और उनकी तुलना आयातों की बिक्री कीमत तथा पहुंच कीमत के साथ की।

	इकाई	2004-05	2005-06	2006-07	जांच अवधि
घरेलू उद्योग की बिक्री कीमत					
➤ बल्क	रु./मी.ट.	***	***	***	***
➤ डिब्बाबंद	रु./मी.ट.	***	***	***	***
➤ औसत	रु./मी.ट.	***	***	***	***
➤ प्रवृत्ति	सूचकांक	100	95.68	83.74	64.61
घ.उ. की उत्पादन लागत					
➤ बल्क	रु./मी.ट.	***	***	***	***

➤ डिब्बाबंद	रु./मी.ट.	***	***	***	***
➤ औसत	रु./मी.ट.	***	***	***	***
➤ प्रवृत्ति	सूचकांक	100	101.54	83.86	79.59
लाभ/हानि					
➤ बल्क	रु./मी.ट.	***	***	***	***
➤ डिब्बाबंद	रु./मी.ट.	***	***	***	***
➤ औसत	रु./मी.ट.	***	***	***	***
➤ प्रवृत्ति	सूचकांक	100	79.12	83.89	21.15

यह नोट किया जाता है कि जहां उत्पादन लागत में वर्ष 2004-05 और 2005-06 के बीच वृद्धि हुई है वहीं उसके बाद गिरावट आई है। तथापि, घरेलू उद्योग की बिक्री कीमत में समुची क्षति अवधि के दौरान सतत गिरावट देखी गई है। इस प्रकार वर्ष 2005-06 और जांच अवधि के बीच जहां उत्पादन लागत और बिक्री कीमत दोनों में गिरावट आई वहीं बिक्री कीमत में आई गिरावट उत्पादन लागत में आई गिरावट की तुलना में काफी अधिक रही है। इस प्रकार आयतों से बाजार में घरेलू उद्योग की कीमतों का हास हुआ है।

लाभ/हानि

57. घ.उ. की लाभप्रदता निम्नलिखित तालिका में दी गई है :

	इकाई	2004-05	2005-06	2006-07	जन.07- दिस.07
कर पूर्व लाभ/ (हानि)	लाख रुपए	***	***	***	***
ब्याज व्यय	लाख रुपए	***	***	***	***
ब्याज एवं कर पूर्व लाभ/ (हानि)	लाख रुपए	***	***	***	***
प्रवृत्ति	सूचकांक	100	87.22	95.52	31.38
प्रति इकाई बिक्री लाभ					
ब्याज पूर्व	रु./मी.ट.	***	***	***	***
प्रवृत्ति	सूचकांक	100	79.11	83.89	21.16
ब्याजोत्तर	रु./मी.ट.	***	***	***	***

प्रवृत्ति	सूचकांक	100	80.66	82.39	23.55
-----------	---------	-----	-------	-------	-------

प्राधिकारी ने यह पाया है कि क्षति अवधि में घरेलू उद्योग के लाभ में पर्याप्त गिरावट आई है। बिक्री मात्रा में सतत पर्याप्त वृद्धि के बावजूद लाभ में गिरावट आई है। प्राधिकारी ने घरेलू उद्योग द्वारा अर्जित प्रति इकाई बिक्री लाभ का निर्धारण किया है और यह नोट किया है कि जांच अवधि में लाभप्रदता में पर्याप्त गिरावट आई है। जांच अवधि के दौरान लाभप्रदता में भारी गिरावट को ध्यान में रखते हुए प्राधिकारी ने यह नोट किया कि क्षति अवधि के दौरान ई यू से आयातों की पहुंच कीमत में भारी गिरावट आई है जिससे घरेलू उद्योग की लाभप्रदता पर सीधा प्रभाव पड़ा है। अतः प्राधिकारी यह नोट करते हैं कि घरेलू उद्योग की लाभप्रदता आयात कीमतों से सीधे संबंधित है।

क्षति के अन्य मापदंडों की जांच

58. घरेलू उद्योग की मात्रा और कीमत पर पाटित आयातों के प्रभाव तथा आयातों की मात्रा एवं मूल्य, घरेलू उद्योग की क्षमता, उत्पादन, क्षमता उपयोग और बिक्री तथा विभिन्न खंडों के बाजार हिस्से के अनुरूप मांग की पद्धति जैसे प्रमुख क्षति संकेतकों की जांच करने के बाद ऐसे अन्य आर्थिक मापदंडों का प्राधिकारी ने विश्लेषण किया है जिनसे घरेलू उद्योग को हुई क्षति की मौजूदगी का पता चल सकता है जो निम्नानुसार है :

क) लाभ/हानि तथा निवेश पर आय

59. घरेलू बाजार में संबद्ध वस्तु की बिक्री से घरेलू उद्योग द्वारा अर्जित लाभ निम्नानुसार रहा था; -

	इकाई	2004-05	2005-06	2006-07	जन.'07- दिस.'07
कर पूर्व लाभ	लाख रु.	***	***	***	***
प्रवृत्ति	सूचकांक	100	85.03	96.63	28.02
व्याज संबंधी व्यय	लाख रु.	***	***	***	***
व्याज एवं कर पूर्व लाभ	लाख रु.	***	***	***	***
प्रवृत्ति	सूचकांक	100	87.22	95.52	31.38
लगाई गई पूंजी	लाख रु.	***	***	***	***
लगाई गई पूंजी पर आय	%	***	***	***	***
प्रवृत्ति	सूचकांक	100	77.83	86.47	27.52

60. उपर्युक्त आंकड़ों से यह पता चलता है कि क्षति जांच अवधि के दौरान घरेलू उद्योग की लाभप्रदता में गिरावट आई है। आधार वर्ष की तुलना में जांच अवधि के दौरान घरेलू उद्योग की घरेलू बिक्री के लिए लगाई गई पूंजी पर आय में भारी गिरावट आई है।

मालसूची

61. घरेलू उद्योग के पास मालसूची में निम्नानुसार घट-बढ़ हुई है :-

	इकाई	2004-05	2005-06	2006-07	जन.'07- दिस.'07
अथ. मालसूची	मी.ट.	***	***	***	***
इति मालसूची	मी.ट.	***	***	***	***
औसत मालसूची	मी.ट.	***	***	***	***
प्रवृत्ति	सूचीबद्ध	100	99	102	118

यह नोट किया जाता है कि घरेलू उद्योग की मालसूची में भारी वृद्धि प्रदर्शित हुई है।

उत्पादकता

62. प्राधिकारी नोट करते हैं कि क्षमता और उत्पादन में समग्र रूप में वृद्धि होने के कारण घरेलू उद्योग की उत्पादकता में बढ़ोत्तरी हुई है।

	इकाई	2004-05	2005-06	2006-07	जांच अवधि
प्रति दिवस उत्पादकता	मी.ट./दिन	***	***	***	***

रोजगार एवं मजदूरी

- 63. प्राधिकारी नोट करते हैं कि रोजगार एवं मजदूरी में पर्याप्त हानि प्रदर्शित होती है।

	इकाई	2004-05	2005-06	2006-07	जांच अवधि
मजदूरी	लाख रुपए	***	***	***	***
प्रवृत्ति	सूचकांक	100	101	108	86

नकद प्रवाह

64. घरेलू उद्योग के नकद लाभ से संबंधित सूचना निम्नलिखित तालिका में दी गई है :

	2004-05	2005-06	2006-07	2007-08
नकद लाभ (लाख रु.)	***	***	***	***
प्रवृत्ति		88.19	96.12	35.06
प्रति इकाई बिक्री पर नकद लाभ	***	***	***	***

प्राधिकारी नोट करते हैं कि घरेलू उद्योग के दोनों घटक बहु उत्पाद कंपनियां हैं अतः नकद लाभ में प्रवृत्ति पर विचार करने के बाद नकद प्रवाह पर पाटित आयातों के प्रभाव का मूल्यांकन करना उचित होगा। यह देखा गया है कि क्षति अवधि के दौरान घरेलू उद्योग के नकद लाभ में तेजी से गिरावट आई है।

घरेलू उद्योगों को प्रभावित करने वाले कारक:

65. लागत संरचना में परिवर्तन, घरेलू उद्योग की प्रतिस्पर्धा और प्रतिस्पर्धी प्रतिस्थानापत्रों की कीमत की जांच पाटित आयातों से भिन्न ऐसे कारकों के विश्लेषण की जांच हेतु की गई है जिनसे घरेलू बाजार की कीमतों पर प्रभाव पड़ सकता है। प्राधिकारी नोट करते हैं कि विचाराधीन उत्पाद के घरेलू बाजार में वृद्धि हो रही है। संबद्ध आयातों की पहुंच कीमत घरेलू उद्योग के दोनों घटकों की बिक्री कीमत से कम है अतः यह निष्कर्ष नहीं निकाला जा सकता कि पारस्परिक प्रतिस्पर्धा इतनी अधिक है कि इससे घरेलू उद्योग की कीमतों में गिरावट आ सके।

वृद्धि

66. यह देखा गया है कि मात्रा संबंधी मापदंडों अर्थात् उत्पादन, क्षमता उपयोग, बिक्री और मांग आदि की मात्रा में समग्र वृद्धि हुई है। तथापि, यह नोट किया जाता है कि जांच अवधि के दौरान घरेलू उद्योग के बाजार हिस्से में गिरावट आई है तथा लगाई गई पूंजी पर आय में भारी कमी हुई है, पाटित आयातों के बाजार हिस्से में समग्र रूप में और कुल मांग दोनों रूपों में वृद्धि हुई है।

पूंजी निवेश जुटाने की क्षमता

67. प्राधिकारी नोट करते हैं कि नए निवेश वर्ष 2006-07 तक किए गए थे। तथापि घरेलू उद्योग के पास उस चरण तक काफी अच्छी लाभप्रदता रखने की क्षमता थी। इसके अलावा, दोनों कंपनियां बहुउत्पाद कंपनियां हैं। तथापि, उत्पाद के सतत पाटन से पूंजी निवेश जुटाने की क्षमता के लिए घरेलू उद्योग के सामर्थ्य पर निश्चित तौर पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ेगा।

कारणात्मक संबंध की पुष्टि करने वाले कारक

68. क्षति अवधि के दौरान घरेलू उद्योग के निष्पादन का विश्लेषण करने से यह पता चलता है कि क्षति अवधि के दौरान घरेलू उद्योग के निष्पादन में वास्तविक गिरावट आई है। पाटित आयातों और घरेलू उद्योग को हुई क्षति के बीच कारणात्मक संबंधों की पुष्टि निम्नलिखित आधारों पर की जाती है :

- (i) आयातों से बाजारों में कीमत कटौती हो रही थी। इसके अलावा, पाटित आयातों की कीमत और आयातों की परिणामी पहुंच कीमत में अवधि की तुलना में वास्तविक गिरावट आई है। इसके प्रत्यक्ष परिणामस्वरूप घरेलू उद्योग कीमत में भारी कमी करने के लिए बाध्य हुआ था।
- (ii) घरेलू उद्योग द्वारा कीमतों में गिरावट किए जाने के परिणामस्वरूप घरेलू उद्योग को अत्यधिक कीमत ह्रास का सामना करना पड़ा;
- (iii) घरेलू उद्योग द्वारा बिक्री कीमत में कमी किए जाने से कंपनी के लाभ, नकद प्रवाह और निवेश पर आय पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ा है;
- (iv) यद्यपि, घरेलू उद्योग ने अपनी कीमत में कमी करके आयात कीमतों में आई गिरावट की बराबरी की तथापि आयात मात्रा में वृद्धि हुई जिससे उसके बाजार हिस्से में गिरावट आई।
- (v) खुले एवं डिब्बाबंद रूप में आयात तथा घरेलू उद्योग की बिक्री की पद्धति से स्पष्टतः यह पता चलता है कि घरेलू उद्योग कम कीमत कटौती और आयात मात्रा में कम वृद्धि के साथ खुले रूप में सामग्री की अपनी बिक्री मात्रा को बढ़ाने में सक्षम था जबकि घरेलू उद्योग को अत्यधिक कीमत कटौती और आयातों में परिणामी वृद्धि के साथ डिब्बाबंद रूप में स्थिर बिक्री मात्रा का सामना करना पड़ा

उपर्युक्त से पाटित आयातों और घरेलू उद्योग को हुई क्षति के बीच कारणात्मक संबंध की स्पष्ट तौर पर मौजूदगी स्पष्ट होती है।

क्षति संबंधी निष्कर्ष

69. जहां तक विभिन्न क्षति मापदंडों की जांच का संबंध है, प्राधिकारी घरेलू उद्योग को हुई क्षति के बारे में निम्नलिखित निष्कर्ष निकालते हैं :-

- (i) ई यू से हुए आयातों में समग्र रूप में और भारत में उत्पादन एवं खपत की तुलना में वृद्धि हुई है। आयात मात्रा में यह वृद्धि डिब्बाबंद रूप में अधिक हुई है जबकि उत्पाद के खुले रूप की तुलना में कीमत कटौती काफी अधिक रही है।
- (ii) पाटित आयातों से खासकर डिब्बाबंद रूप में घरेलू उद्योग की बिक्री कीमत में भारी कटौती हुई है।

- (iii) घरेलू उद्योग की बिक्री कीमत में गिरावट आई है । यद्यपि उत्पादन लागत में गिरावट आई है तथापि, बिक्री कीमत में आई गिरावट उत्पादन लागत में गिरावट की तुलना से अधिक रही है ।
- (iv) घरेलू उद्योग की बिक्री मात्रा में सुधार हुआ है । तथापि, खंडवार बिक्री मात्रा से यह पता चलता है कि आबद्ध खपत और व्यापारी खुली बिक्री मात्रा में पर्याप्त वृद्धि हुई है जबकि डिब्बाबंद बिक्री मात्रा स्थिर रही है । इसके विपरीत खुली श्रेणी में आयात की मात्रा एक समान रही है जबकि डिब्बाबंद रूप में भारी वृद्धि हुई है ।
- (v) क्षति अवधि के दौरान घरेलू उद्योग की लाभप्रदता में गिरावट आई है । यह गिरावट जांच अवधि में सबसे अधिक रही है । काफी अधिक बिक्री मात्रा के बावजूद घरेलू उद्योग द्वारा अर्जित लाभ काफी कम रहे हैं । इसके अलावा, डिब्बाबंद बिक्री में प्राप्त लाभप्रदता खुली बिक्री में प्राप्त लाभप्रदता में आई गिरावट से काफी अधिक रही है ।
- (vi) अतः अनंतिम रूप से यह निष्कर्ष निकाला जाता है कि घरेलू उद्योग को वास्तविक क्षति हुई है ।

कारणात्मक संबंध एवं अन्य कारक

70. प्राधिकारी ने हितबद्ध पार्टियों के अनुरोध के आलोक में और इस संबंध में नियमों को ध्यान में रखते हुए पाटित आयातों तथा घरेलू उद्योग को हुई क्षति के बीच कारणात्मक संबंध की मौजूदगी की जांच की है ।

अन्य ज्ञात सूचीबद्ध मापदंडों का प्रभाव

71. प्राधिकारी ने अन्य कारकों द्वारा हुई कोई क्षति को अलग करने के लिए नियमों में यथा निर्धारित अहेतुकारी कारकों तथा कारणात्मक संबंध के मद्दे ही जांच की । इस संबंध में नियमों में निर्धारित निम्नलिखित सांकेतिक कारकों की जांच की गई है ।

(क) पाटित कीमतों पर बेचे न गए आयातों की मात्रा और कीमत

प्राधिकारी नोट करते हैं कि जांच अवधि के दौरान किसी अन्य देश से विचाराधीन उत्पाद का कोई आयात नहीं हुआ है । वस्तुतः संबद्ध देशों से आयातों के हिस्से में क्षति अवधि में भारी वृद्धि हुई है और जांच अवधि में यह बढ़कर 100% हो गया है । अतः तीसरे देशों से हुए आयातों के कारण घरेलू उद्योग को क्षति नहीं हो सकती है ।

(ख) विदेशी एवं घरेलू उत्पादकों के व्यापार प्रतिबंधात्मक व्यवहार और उनके बीच प्रतिस्पर्धा ।

प्राधिकारी ने घरेलू उद्योग और अन्य भारतीय उत्पादकों द्वारा अपनाए गए किसी व्यापार प्रतिबंधात्मक व्यवहार को नहीं पाया है । प्राधिकारी नोट करते हैं कि संबद्ध वस्तु मुक्त रूप से आयात योग्य है और घरेलू बाजार में कोई व्यापार प्रतिबंधात्मक व्यवहार नहीं है ।

मै.लैंक्सिस ने यह आरोप लगाया है कि घरेलू उत्पादकों ने बाजार में उत्पाद की कीमतों में कटौती शुरू की तथापि प्राधिकारी यह नोट करते हैं कि आयातों की पहुंच कीमत घरेलू उद्योग की बिक्री कीमत से वस्तुतः कम है। इसके अलावा, क्षति अवधि में आयातों की पहुंच कीमत में अत्यधिक गिरावट आई है। ऐसी स्थिति में जहां आयात कीमतें भारतीय उत्पादकों की बिक्री कीमत से काफी कम रही हों वहां यह निष्कर्ष नहीं निकाला जा सकता कि बाजार में कीमत कटौती घरेलू उत्पादकों द्वारा शुरू की गई है।

(ग) मांग में कमी अथवा खपत की पद्धति में परिवर्तन

विचाराधीन अवधि के दौरान समग्र मांग में कोई कमी नहीं आई है। इसके विपरीत क्षति अवधि में मांग में 39% की वृद्धि हुई है। अतः मांग में कोई संभावित गिरावट ऐसा कारक नहीं है जिससे घरेलू उद्योग को क्षति हो सकती हो। खपत की पद्धति में परिवर्तन के बारे में हितबद्ध पार्टियों ने कोई तर्क दिया है और न ही यह प्रतीत होता है कि खपत की पद्धति में हुए परिवर्तन से घरेलू उद्योग को क्षति हो सकती है।

(घ) प्रौद्योगिकी विकास

यद्यपि ईयूके एकमात्र प्रतिवादी निर्यातक ने उनके द्वारा प्रयुक्त और घरेलू उद्योग द्वारा प्रयुक्त प्रौद्योगिकी में अंतर का आरोप लगाया है तथापि घरेलू उद्योग को हुई क्षति को पहुंचाने वाली प्रौद्योगिकी में विकास के बारे में कोई तर्क नहीं दिया गया है। जांच से यह पता नहीं चला है कि संबद्ध वस्तु के उत्पादन की प्रौद्योगिकी में कोई खास परिवर्तन हुआ है। जहां तक प्रौद्योगिकी में अंतर का संबंध है, प्राधिकारी यह नोट करते हैं कि घरेलू उद्योग और विदेशी उत्पादकों द्वारा क्षति अवधि के दौरान एक समान प्रौद्योगिकी से वस्तु का उत्पादन और उसकी बिक्री की जा रही थी और घरेलू उद्योग की लाभप्रदता पूर्ववर्ती वर्षों में बेहतर रही थी जबकि उसमें जांच अवधि में तेजी से गिरावट आई थी। इसके अलावा, निर्यातक द्वारा प्रदत्त सूचना से स्वयं पर्याप्त पाटन की मौजूदगी का पता चलता है जिससे इस बात की पुष्टि होती है कि निर्यातक द्वारा उस कीमत की तुलना में अपने घरेलू बाजार में काफी अधिक कीमतों पर उत्पाद की बिक्री की जा रही है जिस कीमत पर भारत को इस वस्तु का निर्यात किया जा रहा है। यदि निर्यातक द्वारा अपने घरेलू बाजार से तुलनीय कीमत पर भारतीय बाजार में वस्तु की बिक्री की जाती तो घरेलू उद्योग को वस्तुतः आधार वर्ष में प्राप्त लाभ की तुलना में अधिक लाभ प्राप्त हुआ होता। ऐसा मामला होने के कारण प्राधिकारी यह मानते हैं कि प्रौद्योगिकी में अंतर से घरेलू उद्योग को क्षति नहीं हुई है। अतः अनंतिम रूप से यह निष्कर्ष निकाला जा सकता है कि प्रौद्योगिकी में संभावित विकास के कारण घरेलू उद्योग को क्षति नहीं हुई है।

(ड) निर्यात निष्पादन

घरेलू उद्योग की निर्यात बिक्री में वृद्धि हुई है । निर्यात में संभावित गिरावट घरेलू उद्योग को हुई क्षति का संभावित कारण नहीं हो सकती है ।

विवरण	इकाई	2004-05	2005-06	2006-07	जांच अवधि
निर्यात बिक्री	मी.ट.	***	***	***	***

(च) घरेलू उद्योग की उत्पादकता

घरेलू उद्योग की उत्पादकता में सुधार हुआ है । उत्पादकता में संभावित गिरावट घरेलू उद्योग को हुई क्षति का संभावित कारण नहीं हो सकती है ।

उपर्युक्त से प्राधिकारी अनंतिम रूप से यह निष्कर्ष निकालते हैं कि अन्य कारकों की वजह से हुई क्षति का कोई साक्ष्य नहीं है ।

समग्र निर्धारण

72. विभिन्न क्षति एवं कारणात्मक संबंध के कारकों के उपर्युक्त विश्लेषण से यह पता चलता है कि क्षति अवधि के दौरान कुछ मापदंडों में सुधार के बावजूद घरेलू उद्योग के निष्पादन में वास्तविक गिरावट आई है और उद्योग को बिक्री मात्रा, क्षमता उपयोग, बाजार हिरसे, लाभप्रदता, और नकद प्रवाह और निवेश पर आय के रूप में वास्तविक क्षति हुई है जबकि घरेलू बाजार में उत्पाद की अच्छी मांग रही थी । हुई क्षति वास्तविक और पर्याप्त है, अतः प्राधिकारी अनंतिम रूप से यह निष्कर्ष निकालते हैं कि घरेलू उद्योग को वास्तविक क्षति हुई है और ऐसी क्षति ईयूसी से हुए पाटित आयातों के कीमत एवं मात्रात्मक प्रभाव की वजह से अधिक हुई है । अन्य कारकों से हुई कोई क्षति पर्याप्त नहीं है ।

क्षति एवं पाटन मार्जिन की मात्रा

73. प्राधिकारी ने घरेलू उद्योग की उत्पादन लागत को ध्यान में रखते हुए घरेलू उद्योग के लिए क्षतिरहित कीमत निर्धारित की है । क्षतिरहित कीमत का निर्धारण विचाराधीन उत्पाद के खुल एवं डिब्बाबंद रूप हेतु अलग-अलग किया गया है । घरेलू उद्योग की इस क्षतिरहित कीमत की तुलना क्षति मार्जिन के निर्धारण हेतु संबद्ध आयातों के भारित औसत पहुंच मूल्य के साथ की गई है । निर्यातक एवं घरेलू उद्योग की पैकिंग लागत में भारी अंतर पाया गया है । अतः डिब्बा बंद वस्तु के क्षति मार्जिन की गणना के प्रयोजनार्थ पैकिंग लागत को डिब्बाबंद वस्तु की क्षतिरहित कीमत और निर्यातक की डिब्बाबंद की पहुंच लागत से अलग रखा गया है । क्षति मार्जिन निम्नानुसार निकाला गया है :

क्षति मार्जिन की गणना

(रु. मी.टन)

	खुला	डिब्बाबंद	भारित औसत
लेक्सिस			
क्षतिरहित कीमत	***	***	***
आयातों की पहुंच कीमत	***	***	***
क्षति मार्जिन	***	***	***
अन्य			
क्षतिरहित कीमत	***	***	***
आयातों की पहुंच कीमत	***	***	***
क्षति मार्जिन	***	***	***

निष्कर्ष

74 हितबद्ध पार्टियों द्वारा उठाए गए मुद्दों और किए गए अनुरोधों तथा इस जांच परिणाम में प्राधिकारी के समक्ष उपलब्ध तथ्यों की जांच करने के बाद प्राधिकारी अनंतिम रूप से यह निष्कर्ष निकालते हैं कि :

- (क) ईयू से भारत को विचाराधीन उत्पाद का निर्यात उसके सामान्य मूल्य से कम कीमत पर किया गया है ;
- (ख) घरेलू उद्योग को वास्तविक क्षति हुई है ।
- (ग) यह क्षति यूरोपीय संघ से हुए पाटित आयातों के कारण हुई है ।

भारतीय उद्योग के हित एवं अन्य मुद्दे

75. प्राधिकारी नोट करते हैं कि पाटनरोधी शुल्क का उद्देश्य सामान्यतः पाटन के अनुचित व्यापार व्यवहार द्वारा घरेलू उद्योग को हुई क्षति को समाप्त करना है और भारतीय बाजार में ऐसी खुली और उचित प्रतिस्पर्धा की स्थिति बहाल करना है जो देश के सामान्य हित में है । पाटनरोधी उपाय लागू किए जाने से संबद्ध देश से आयात किसी भी रूप में प्रतिबंधित नहीं होगा और इसलिए उपभोक्ताओं के लिए उत्पादों की उपलब्धता प्रभावित नहीं होगी ।

76. प्राधिकारी यह स्वीकार करते हैं कि पाटनरोधी शुल्क लगाए जाने से संबद्ध वस्तु के उपयोग से विनिर्मित उत्पादों के कीमत स्तर प्रभावित हो सकते हैं और परिणामतः इन उत्पादों की तुलनात्मक प्रतिस्पर्धात्मकता पर कुछ प्रभाव पड़ सकता है । तथापि, भारतीय बाजार में पाटनरोधी उपायों द्वारा उचित प्रतिस्पर्धा में खासकर उस स्थिति में कमी नहीं आएगी जब पाटनरोधी शुल्क का उद्ग्रहण घरेलू उद्योग को हुई क्षति समाप्त करने के लिए आवश्यक राशि तक सीमित रखा जाएगा। इसके विपरीत पाटनरोधी उपाय लागू किए जाने से पाटन के व्यवहार द्वारा प्राप्त अनुचित लाभ समाप्त होंगे, घरेलू उद्योग का ह्रास रुकेगा और संबद्ध वस्तु के उपभोक्ताओं के लिए व्यापक विकल्प उपलब्ध रखने में मदद मिलेगी ।

पाटनरोधी उपाय लागू किए जाने से संबद्ध देशों से आयात किसी भी रूप में प्रतिबंधित नहीं होंगे और इसलिए उपभोक्ताओं के उत्पाद की उपलब्धता पर प्रभाव नहीं पड़ेगा ।

सिफारिशें

77. प्राधिकारी नोट करते हैं कि जांच की शुरुआत कर उसकी सूचना सभी हितबद्ध पार्टियों को दी गई थी और निर्यातकों, आयातकों एवं अन्य हितबद्ध पार्टियों को पाटन, क्षति एवं कारणात्मक संबंध के विभिन्न पहलुओं के बारे में सकारात्मक सूचना प्रदान करने का पर्याप्त अवसर प्रदान किया गया था । निर्धारित नियमों के अनुसार पाटन, क्षति एवं पाटन तथा घरेलू उद्योग को हुई क्षति के बीच कारणात्मक संबंधों के बारे में प्रारंभिक जांच शुरू करने और उसे संपन्न करने के बाद और सकारात्मक पाटन मार्जिन तथा ऐसे पाटित आयातों के कारण घरेलू उद्योग को हुई वास्तविक क्षति की अनंतिम रूप से पुष्टि करने के बाद प्राधिकारी का यह मत है कि जांच पूरी होने तक पाटन एवं क्षति को समाप्त करने के लिए अनंतिम उपाय लागू करना अपेक्षित है । अतः प्राधिकारी यह आवश्यक समझते हैं और संबद्ध क्षेत्र से संबद्ध वस्तु के आयातों पर नीचे उल्लिखित प्रपत्र और तरीके से अनंतिम पाटनरोधी शुल्क लगाने की सिफारिश करते हैं ।

78. प्राधिकारी द्वारा अपनाए गए कमतर शुल्क नियम को ध्यान में रखते हुए प्राधिकारी पाटन मार्जिन और क्षति मार्जिन, जो भी कम हो, के बराबर अनंतिम पाटनरोधी शुल्क लगाने की सिफारिश करते हैं ताकि घरेलू उद्योग को हुई क्षति समाप्त की जा सके । तदनुसार यूरोपीय संघ के मूल की या वहां से निर्यातित थियोनाइल क्लोराइड के आयात पर इस जांच परिणाम के जारी होने की तारीख से शुल्क तालिका के कालम 9 में उल्लिखित राशि के बराबर अनंतिम पाटनरोधी शुल्क की सिफारिश की जाती है ।

क्र.सं.	शीर्ष/ उपशीर्ष	वस्तु वर्णन	उदगम का देश	निर्यात का देश	उत्पादक	निर्यातक	शुल्क की राशि	इकाई	मुद्रा
1.	28121040	थियोनायल क्लोराइड	यूरोपीय संघ	यूरोपीय संघ	लेक्सिस एजी	लेक्सिस डीयूसलैंड जीएमबीएच	33	प्रति मी.ट.	अम.डॉ.
2.	28121040	थियोनायल क्लोराइड	यूरोपीय संघ	यूरोपीय संघ	क्र. सं. 1 से भिन्न उत्पादक तथा निर्यातक का कोई संयोजन		84	प्रति मी.ट.	अम.डॉ.
3.	28121040	थियोनायल क्लोराइड	यूरोपीय संघ	यूरोपीय संघ से भिन्न कोई देश	कोई	कोई	84	प्रति मी.ट.	अम.डॉ.
7.	28121040	थियोनायल क्लोराइड	यूरोपीय संघ से भिन्न कोई देश	यूरोपीय संघ	कोई	कोई	84	प्रति मी.ट.	अम.डॉ.

विनिमय दर 41.92रु. प्रति अम.डॉ.

79. प्राधिकारी ने अंतिम जांच परिणामों के समय सत्यापन के अधीन रहते हुए निर्यातक द्वारा प्रदत्त आंकड़ों के आधार पर क्षति मार्जिन का निर्धारण किया है ।

80. प्रारंभिक जांच परिणामों को अधिसूचित करने के बाद निम्नलिखित प्रक्रिया अपनाई जाएगी:-

(क). प्राधिकारी समस्त हितबद्ध पार्टियों से इन जांच परिणामों पर टिप्पणियां आमंत्रित करेंगे और उन पर अंतिम जांच परिणामों में विचार किया जाएगा;

- (ख) प्राधिकारी द्वारा निर्यातकों, आयातकों, याचिकाकर्ता और संबंधित समझी जाने वाली अन्य हितबद्ध पार्टियों को अलग से लिखा जा रहा है, जो इस पत्र के प्रेषण की तारीख से चालीस दिनों के भीतर अपने विचारों से अवगत करा सकते हैं। कोई अन्य हितबद्ध पार्टी भी इस जांच परिणाम के प्रकाशन की तारीख से चालीस (40) दिनों के भीतर अपने विचारों से अवगत करा सकती है;
- (ग) प्राधिकारी द्वारा आवश्यक समझी गई सीमा तक आगे और सत्यापन किया जाएगा;
- (घ) विभिन्न हितबद्ध पार्टियों के विचारों की मौखिक सुनवाई करने के लिए प्राधिकारी सुनवाई आयोजित करेंगे।
- (ङ) प्राधिकारी द्वारा अंतिम जांच परिणाम घोषित करने से पूर्व अनिवार्य तथ्यों का प्रकटन किया जाएगा।

आर. गोपालन, निर्दिष्ट प्राधिकारी

MINISTRY OF COMMERCE AND INDUSTRY

(Department of Commerce)

(DIRECTORATE GENERAL OF ANTI-DUMPING AND ALLIED DUTIES)

NOTIFICATION

New Delhi, the 31st March, 2009

Preliminary Findings

Subject : Anti-Dumping Investigation involving imports of Thionyl Chloride originating in or exported from the European Union.

F.No. 14/1/2008-DGAD.—Having regard to the Customs Tariff Act 1975 as amended in 1995 (hereinafter referred to as the Act) and the Customs Tariff (Identification, Assessment and Collection of Anti-Dumping Duty on Dumped Articles and for Determination of Injury) Rules, 1995, (hereinafter referred to as the Rules) thereof:

1. WHEREAS M/s Gwalior Chemicals & Industries Ltd., Nagda and M/s. Transpek Industry Ltd., Vadodara (herein after referred to as the applicants) have filed an application before the Designated Authority (hereinafter referred to as the Authority), in accordance with the Act, and the Rules, alleging dumping of Thionyl Chloride (hereinafter referred to as the subject goods), originating in or exported from the European Union (hereinafter referred to as subject country) and requested for initiation of an investigation for levy of anti dumping duties on the subject goods.

2. AND WHEREAS, the Authority on the basis of sufficient evidence submitted by the applicants issued a public notice dated 23rd June, 2008, published in the Gazette of India, Extraordinary, initiating Anti-Dumping investigations concerning imports of the subject goods, originating in or exported from the subject country, in accordance with the sub-Rule 5(5) of the

Rules, to determine the existence, degree and effect of alleged dumping and to recommend the amount of antidumping duty, which, if levied would be adequate to remove the injury to the domestic industry.

A. Procedure

3. Procedure described below has been followed with regard to this investigation after issuance of the public notice notifying the initiation of the above investigation by the Authority :

- (i) The Authority notified the Embassies/Representatives of the European Union in India about the receipt of dumping application made by the petitioners before initiating the investigation in accordance with sub-Rule (5) of Rule 5 supra.
- (ii) The Embassies/Representatives of the subject country in New Delhi were informed about the initiation of the investigation in accordance with Rule 6(2).
- (iii) The Designated Authority sent copies of initiation notifications dated 23rd June, 2008 to the Embassies/Representatives of the subject country in India, known exporters from the subject country, known importers and other interested parties, and the domestic industry, as per the information available with it. Parties to this investigation were requested to file questionnaire responses and make their views known in writing within prescribed time limit. Copies of the letter, petition and questionnaire sent to the exporter were also sent to the Embassy of subject country along with a list of known exporters/producers with a request to advise the exporters/producers from the subject country to respond to the questionnaire within the prescribed time.
- (iv) Copy of the non-confidential version of the petition filed by the domestic industry was made available to the known exporters and the Embassies of the subject country in accordance with Rules 6(3) supra.
- (v) Questionnaires were sent to the following known exporters from subject country in accordance with the rule 6(4) to elicit relevant information:

S.N.	Company's Name	Country
1.	Lanxess AG	Germany
2.	NV Sepulchre Chemical Distribution	Belgium

- (vi) In response to the above notification, the following exporters filed their response to the exporters questionnaire .

S.N.	Company's Name	Country
1.	1. Lanxess Deutschland GmbH (holding company of Lanxess AG)	Germany

- (vii) Questionnaire was sent to the following known importers and Consumers of subject goods in India calling for necessary information in accordance with Rule 6(4).

S.N.	Company's Name
1.	Hindustan Insecticides Ltd
2.	Bilag Industries P Ltd
3.	Coromandel Fertilisers Ltd
4.	Punjab Chemicals & Crop Protection Ltd
5.	Excel Crop Care Ltd.
6.	Gharda Chemicals Ltd.
7.	Gujarat Agrochem Ltd.
8.	Heranba Industries Ltd.
9.	Kutch Chemical Industries Ltd.
10.	Nagarjuna Agrichem Ltd.
11.	Shree Pushkar Petro Products Pvt. Ltd.
12.	Unichem Laboratories Ltd.
13.	Isagro (Asia) Agrochemicals Pvt. Ltd.
14.	Shiva Pharmachem Pvt. Ltd.
15.	Medilux Laboratories Pvt. Ltd.
16.	Prasad And Company Pharmachem Ltd.
17.	Tagros Chemicals India Ltd
18.	Mahur Dye Chem Ind. Ltd.
19.	Bodal Chemicals
20.	Novodigm Limited
21.	Supriya Chemicals
22.	United Phosphorous Limited

(viii) In response, information has been received only from M/s Hindusthan Inscetocides Ltd., New Delhi. The company has stated in their response that they are getting competitive price for the subject goods from EU and the subject goods are used for the manufacture of "Endosulfan Technical" formulation and further apprised that the imposition of anti-dumping duty would not be advisable for such industries which are involved in the manufacture of the formulation.

(ix) Request was made to the Directorate General of Commercial Intelligence and Statistics (DGCI&S) to arrange details of imports of subject goods for the past three years, including the period of investigations.

(x) The Authority made available non-confidential version of the evidence presented by various interested parties in the form of a public file kept open for inspection by the interested parties.

(xi) The Non-Injurious Price based on the optimum cost of production and cost to make and sell the subject goods in India based on the information furnished by the petitioner on the basis of Generally Accepted Accounting Principles (GAAP) was worked out provisionally so as to ascertain whether Anti-Dumping duty lower than the dumping margin would be sufficient to remove injury to Domestic Industry.

(xii) The confidentiality claims of various interested parties in respect of the data submitted by them have been examined. The information, which is by nature confidential or which has been provided on a confidential basis by the interested parties, along with non-confidential summary thereof, has been treated confidential. *** in this finding represents information furnished by the domestic industry on confidential basis and so considered by the Authority under the Rules.

(xiii) Investigation was carried out for the period starting from 1.01.2007 to 31.12.2007 (POI). The examination of trends in the context of injury analysis covered the periods April, 2004-March, 2005, April, 2005-March, 2006, April, 2006-March, 2007 and the POI.

B. Product under Consideration and Like Article

4. The Product under consideration in the present petition is Thionyl Chloride, having chemical formula SOCl_2 , also known as Sulfurous Oxychloride,

Sulfurous Dichloride, Sulfinyl Chloride, Sulfinyl Dichloride, Dichlorosulfoxide etc. It is an inorganic chemical classified under Chapter 28 of the Customs Tariff Act. It is a reactive chemical used in Chlorination reactions. It is a colorless liquid distillable at room temperature and pressure and decomposes at above 140oC.

5. Thionyl chloride is used inside lithium-thionyl chloride batteries as the positive active material with lithium as the negative active material. It is also used as a reagent for the production of other chemical compounds or materials. In military usage, thionyl chloride is used in the "di-di" method of producing G-series nerve agents. It is widely used to convert carboxylic acids to acyl chlorides and alcohols to the corresponding alkyl chlorides via an internal nucleophilic substitution.

6. Thionyl Chloride is classified under Chapter 28 of the Customs Tariff Act, 1975 Subheading no. 28.12 of Indian Trade Classification (Based on Harmonized Commodity Description and Coding system). Custom heading is however, for reference purpose only and not binding upon the product scope.

7. With regard to like article, Rule 2(d) provides as under: -

"like article " means an article which is identical or alike in all respects to the article under investigation for being dumped in India or in the absence of such article, another article which although not alike in all respects, has characteristics closely resembling those of the articles under investigation."

8. The applicant has claimed that there is no known difference between the products manufactured by them and the subject goods imported from the subject country, which can have any impact on price, usage, quality etc. The applicant also claims that the technology and primary production process employed by them and the foreign producers are comparable; however, producers fine-tune their production process based on available facilities and necessities.

9. No argument has been received from any interested party on the scope of product under consideration or like article. Examination of the product and import data submitted by the applicant indicates that there is no difference between subject goods produced by the Domestic Industry and imported from the European Union. Product under consideration produced by the Indian industry and imported from the subject country are comparable in terms of

characteristics such as physical and chemical characteristics, manufacturing process and technology, functions and uses, product specifications, pricing, distribution and marketing and tariff classification of the goods. In view of the similarity in manufacturing process and substitutability, the Authority provisionally holds that the two are required to be treated as alike and one product for the purpose of defining the 'product under consideration' in this case.

C. Domestic Industry and Standing

10. The petition for imposition of anti dumping duty was jointly filed by M/S Transpek Industry Ltd. and M/s Gwalior Chemicals Industries Ltd. The Authority notes that there are three other companies which are known to have created capacities to produce the subject goods in India i.e., M/s Emarco Chemicals Pvt. Ltd., Gujarat, M/s Meenakshi Chemicals Pvt. Ltd., Baroda and M/s Shree Sulphuric Limited, Ahmedabad. The Authority has assessed the production volumes of these producers and their support and opposition to the petition. M/s Shree Sulphurics and M/s Meenakshi Chemicals have provided their production information and supported the application. M/s Emarco Chemicals Pvt. Ltd., Gujarat has apparently stopped production and has not responded to the Authorities request for information. On the basis of the information received, the Authority notes that the applicant companies constitute a major proportion in Indian production. Therefore, the Authority holds that for the purpose of this investigation the petitioners command the standing in terms of Rule 5(3) and constitute the domestic industry in terms of Rule 2(b).

11. The exporters, producers, importers, consumers and other interested parties who have not supplied information in this investigation have been treated as non-cooperating interested parties.

12. After taking into account the production of all the known producers of the subject goods in the Country, the Authority is of the opinion that the applicant's command a major proportion of the production of the subject goods in India and holds that for the purpose of this investigation the applicants command the standing in terms of Rule 5(3) and constitutes the domestic industry in terms of Rule 2(b).

D. De Minimis Limits

13. As per the import data received by the Authority from the Directorate General of Commercial Intelligence and Statistics (DGCI&S) and other secondary sources, as well as the data furnished by the cooperating exporters from the subject country, the imports of the subject goods from the subject country are above the de minimis level.

E. Other submissions and issues raised

14. Followings are the issues raised by the domestic industries:

- (i) The product under consideration in this case is Thionyl Chloride, which is sold in loose and packed conditions. In view of significant difference in the price of these two products, the price comparisons may be done separately and anti dumping duties may be recommended separately for the two forms.
- (ii) The goods produced by the domestic industry are like articles to the goods imported.
- (iii) Production of the petitioner companies is significantly beyond 50% of Indian production. The two companies constitute domestic industry within the meaning of the Rules.
- (iv) The goods are being exported from Europe at dumping price and the same is established by the estimates of normal value and export price. The dumping margin has been determined by the petitioners separately for the two firms and thereafter cumulated for determining dumping margin for the product under consideration.
- (v) The domestic industry has suffered material injury as a result of dumped imports which is established by (i) increase in the volume of dumped imports in absolute terms as also relative to production and consumption in India, (ii) imports are undercutting the prices of the domestic industry which led to significant price depression in the market; (iii) as a consequence of price undercutting and increase in imports, performance of the domestic industry suffered on account of production, sale, capacity utilization, profit/loss, return on investment, cash flow, etc.
- (vi) The authority may kindly recommend imposition of interim anti dumping duties at the earliest in order to check dumping being caused during the investigation.

15. Following are the issues raised by M/s. Lanxess AG:

- (i) The market of Thionyl Chloride in India is highly unusual market, which was dominated by two producers upto end of 2007, who enjoy 77.74% market share as per their own admission.
- (ii) The two producers in tandem started cutting prices coupled with the new producer M/s. Shree Sulphuric, who back fired on Transpek Industry and the company was out of production.
- (iii) Market share of domestic industry fallen from 85.17% to 77.74%, which has been gained by other Indian producer i.e. Shri Sulphuric.
- (iv) Exports volume from EU remained static due to high level of customs duty as also inability of the exporter to compete with the domestic producers in general and Gwalior Chemicals in particular.
- (v) Low price offered by Gwalior Chemical is intended to eliminate competition and to eliminate co-producer itself.
- (vi) This process of anti dumping is an effort by Gwalior Chemical to make monopoly in the domestic market.
- (vii) Domestic producers are forcing the exporter to reduce and match the prices.
- (viii) Capacity is in excess of demand in India and further capacities are being added by the producers.
- (ix) There is no causal link between the alleged injury, if any and exports from European Union.
- (x) Production and sales of Gwalior Chemicals increased and inventory declined.
- (xi) There is no whisper in the published annual report of Gwalior Chemicals regarding alleged injury from dumping, barring some price effect, which is also created by Gwalior Chemicals itself.

- (xii) Excel Cropcare is a related company of Transpek and is a known importer of the product.
 - (xiii) Transpek had earlier approached agent of Lanxess and enquired about the importation of product.
 - (xiv) Quality of material exported by Lanxess is superior.
 - (xv) Increase in imports from European Union is just marginal.
 - (xvi) No injury to Gwalior Chemicals and injury to Transpek, if any, is due to Gwalior Chemicals.
 - (xvii) Reduction in profits cannot be basis of anti dumping application.
 - (xviii) Exporter cannot lead the price by just 8% share in total demand of the product in India.
 - (xix) Injury should be examined separately to each producer and not in consolidated manner.
16. The above arguments have been taken into account while notifying the present findings and have been addressed at appropriate places in these findings.

Examination by the Authority

17. The submissions made are examined as under:
18. As per the evidence available on record, production of M/s Gwalior Chemicals Industries Ltd., Nagda and Transpek Industries Ltd., Vadodara account for a major proportion of the total domestic production. The Applicants thus satisfy the requirements of rule 2(b) and rule 5(3) of Anti dumping rules.
19. The Authority therefore holds the Applicant as 'Domestic Industry' within the meaning of Rule 2(b) of Anti dumping rules.

20. The confidentiality claims of the domestic industry in respect of the data submitted by them have been examined. The information, which is by nature confidential or which has been provided on a confidential basis, along with non-confidential summary thereof, has been treated confidential.

21. The Authority has determined the injury to domestic industry and a causal link between the dumped imports and injury, taking into account all relevant facts in accordance with rule 11 of Anti-dumping rules.

F. Determination of Dumping Margin

22. The Authority sent questionnaire to following known exporters from subject territory, advising them to provide information in the form and manner prescribed:

- a) Lanxess Deutschland GmbH (holding company of Lanxess AG)
- b) NV Sepulchre Chemical Distribution

23. Lanxess responded to the Authority and has provided detailed questionnaire response and submissions. In its submissions, following issues have been raised by the exporter with regard to determination of dumping and dumping margin.

- (i) Normal value cannot be determined as per sales in the domestic market, as European Union is an unusual market, whereas India is a big market. Domestic prices in European Union are distorted and inapplicable.
- (ii) There is difference in production process. Lanxess has continuous process and getting liquid sulphur through pipeline, whereas Indian producers do not have continuous process and are getting dried sulphur and incurring additional freight cost.
- (iii) There is no need to compare domestic price in European Union with cost of production.
- (iv) Domestic industry has determined normal value as per estimates of cost, details of which have not been disclosed.

- (v) Lanxess is selling 80% of its exports to India under advance license. Because majority of its exports are under advance license, duty draw back should be adjusted in export price.

24. Since Lanxess has responded to the Authority, individual dumping margin has been determined in respect of Lanxess.

F.1 Examination of Market economy claims

25. The European Union being a market economy area, the procedural formalities with regard to Non-Market Economy presumptions in terms of para 8 of Annexure I to the Rules was not taken resort to.

Examination by the Authority

26. In response to the anti-dumping investigation initiated by the Designated Authority, questionnaire response has been filed by Lanxess, examination of which showed that the same was deficient. The deficiencies were pointed out to the exporter and certain additional information was also called. The exporter replied to the letter of deficiency as well. However, full information in the form and manner has not been provided. In particular, the exporter has not provided vital information relating to the cost of production. Therefore, for the purpose of preliminary finding, best available information of the exporter has been taken into account.

F.2 Determination of normal value

Normal Value in case of Lanxess and other non-cooperating exporters

27. With regard to the argument of Lanxess that normal value should not be determined on the basis of domestic price in the EU, the Authority notes that the Rules provide for the methodology to be adopted for determining normal value and does not envisage any situation stated by the exporter warranting discarding of the price in the domestic price. The prescribed methodology in fact provides for a sequence in which the normal value should be determined. In a situation where the exporter has representative viable domestic sales, the only option for determination of the normal value is the price in the domestic market. The Rules also list certain factors which affect price comparability and also provides for any other factor which is demonstrated to have affected price comparability. The exporter has not identified or quantified any factor which is

demonstrated to have affected price comparability. In view of the same, the Authority holds that the normal value in EU is required to be determined on the basis of the price in the domestic market in the EU.

28. The information provided by the exporter was analyzed for the period for which the information was provided and the same shows as follows -

(EURO/MT)

	2005	2006	2007
<i>Bulk shipments</i>			
Domestic market	***	***	***
Exports to India	***	***	***
Exports to third countries	***	***	***
<i>Packed shipments</i>			
Domestic market	***	***	***
Exports to India	***	***	***
Exports to third countries	***	***	***

29. The Authority notes that whereas the price of the exporter in the domestic market was quite stable, its export price to India and third countries declined sharply.

30. Company has provided separate information of unit price in respect of loose and packed form of the product. The company has exported both the forms in the Indian market. In view of significant price and cost difference in the loose and packed form of the product, the Authority has determined separate normal value for the two forms for purpose of comparison only and determined one normal value of the subject goods on weighted average basis for dumping margin calculation. Price adjustments have been claimed on account of packing, freight and handling charges, which have been allowed, provisionally, pending further investigations. Since the domestic sales information is in Euro,

the Authority has determined normal value, export price and dumping margin in Euro. Normal value on this basis, as per the data provided by the exporter, comes to Euro *** for loose and Euro *** for packed Thionyl Chloride and on weighted average basis the same has been determined as Euro ***.

F.3 Export Price

31. During the POI, Lanxess has exported *** MT of the subject goods to India through *** transactions. Out of which, *** MT was in loose and *** MT was in packed conditions. Export price has been determined considering all export transactions and separately for the loose and packed conditions. Price adjustments have been claimed on account of packing, inland freight, handling and overseas freight, which have been allowed, provisionally, pending further investigations. Since the domestic sales information is in Euro, the Authority has determined export price also in Euro. The exporter has claimed average exchange rate of 1 Euro = ₹57.01 INR, which has been adopted for the purpose of the present preliminary determination. Export price on this basis comes to Euro *** for loose goods and Euro *** for packed goods and on weighted average basis the same has been determined as Euro ***.

F.4 Dumping Margins

Dumping Margin in case of M/s. Lanxess and other non-cooperating exporters

32. Considering the normal value and export price determined, as explained above, the Authority has determined weighted average dumping margin considering the associated volume of exports.

33. The Authority notes that only Lanxess has responded to the Authority and has provided questionnaire response. No other exporter from EU has responded to the Authority. Normal value in case of other non cooperating exporters has been determined at the same level as has been determined in case of Lanxess. In case of non co-operating exporters, ex factory export price has been determined by considering the lower value of export separately for both the loose and packed forms. Therefore, separate net export price has been determined in case of other exporters from EU.

(EURO/MT)

	<i>Lanxess</i>			<i>Others</i>		
	Loose	Packed	Wt. Avg.	Loose	Packed	Wt. Avg.
Normal value						
Ex-factory price	***	***	***	***	***	***
Export price						
Net ex-factory price	***	***	***	***	***	***
Dumping margin amount	***	***	***	***	***	***
Dumping margin %	200- 215	285- 310	225- 235	340- 350	540- 550	380- 390

G. INJURY DETERMINATION

INJURY AND CAUSAL LINK

34. Article 3.1 of the WTO Agreement and Annexure-II of the Rules provide for an objective examination of both, (a) the volume of dumped imports and the effect of the dumped imports on prices, in the domestic market, for the like products; and (b) the consequent impact of these imports on domestic producers of such products. With regard to the volume effect of the dumped imports, the Authority is required to examine whether there has been a significant increase in dumped imports, either in absolute term or relative to production or consumption in India. With regard to the price effect of the dumped imports, the Authority is required to examine whether there has been significant price undercutting by the dumped imports as compared to the price of the like product in India, or whether the effect of such imports is otherwise to depress the prices to a significant degree, or prevent price increases, which would have otherwise occurred to a significant degree.

35. As regards the impact of the dumped imports on the domestic industry para (iv) of Annexure-II of the Anti Dumping Rules states as follows.

"The examination of the impact of the dumped imports on the domestic industry concerned, shall include an evaluation of all relevant economic factors and indices having a bearing on the state of the Industry, including natural and potential decline in sales, profits, output, market share, productivity, return on investments or utilization of capacity; factors affecting domestic prices, the magnitude of margin of dumping actual and potential negative effects on cash flow, inventories, employment wages growth, ability to raise capital investments."

36. The Authority has taken note of the arguments of the interested parties on injury examination and addressed the issues raised at appropriate places. The Authority has examined the injury parameters objectively taking into account the facts and the arguments of the interested parties.

Views of domestic industry

37 The domestic industry has submitted the following to claim that they have suffered material injury as a result of dumping from the European Union:

- (i) Performance of the domestic industry improved in terms of production and sales. However, capacity utilization was not at optimal level.
- (ii) There is price difference between the imported and domestic product. As a direct consequence, the domestic industry is forced to reduce the prices.
- (iii) Landed price of imports has been lower than selling price of domestic industry all along except for Bulk product in base year. The imports have been undercutting the prices of domestic industry throughout the injury period.
- (iv) Selling prices of the domestic industry has declined very steeply. The imports are thus causing significant price depression in the market.
- (v) As a consequence, imports have led to deterioration in the performance of the domestic industry on account of decline in per unit profit of the domestic industry.
- (vi) Return on investment severely deteriorated. Thus, deterioration in ROI was direct consequence of reduction in the selling prices, triggered as a result of decline in the import prices.

- (vii) The market for the subject goods has seen significant growth and imports from EU maintained significant market share in total consumption in India.
- (viii) Imports increased significantly in absolute terms. As a direct consequence, market share of the subject imports increased and that of domestic industry declined.
- (ix) *The product is sold in bulk and packed condition and the packing cost is very significant. Therefore, the consideration of average data will not show the correct position.*

Examination by the Authority

38. The following are the essential facts before the Authority in respect of alleged injury to the domestic industry caused by dumped imports from European Union, which will form the basis for the preliminary determination by the Authority.

39. Having examined the degree and extent of dumping from the European Union the Authority has examined the injury caused to the domestic industry, if any, and the causal link between the dumped imports and injury so suffered by the domestic industry. The Authority holds that the applicant Companies, constitute a major proportion of Indian production of the subject goods during the period of investigation under Rule 2(b) of Anti-dumping Rules. Therefore, for the purpose of injury determination the applicant company has been held to constitute the domestic industry within the meaning of the Rules.

40. In the spirit of Supreme Court Judgment in Reliance Industries Vs Designated Authority matter, all the known producers of the subject goods have been requested to file their cost and injury information for the purpose of injury determination and determination of non-injurious price for the domestic industry as a whole. However, these producers have not filed any relevant information so far. Therefore, for the purpose of preliminary determination the cost and injury information of the applicant domestic producer, constituting the domestic industry as defined in Rule 2(b), has been examined.

41. Rule 11 of Antidumping Rules read with Annexure-II provides that an injury determination shall involve examination of factors that may indicate injury to the domestic industry, ".... taking into account all relevant facts, including the volume of dumped imports, their effect on prices in the domestic

market for like articles and the consequent effect of such imports on domestic producers of such articles...." In considering the effect of the dumped imports on prices, it is considered necessary to examine whether there has been a significant price undercutting by the dumped imports as compared with the price of the like article in India, or whether the effect of such imports is otherwise to depress prices to a significant degree or prevent price increases, which otherwise would have occurred, to a significant degree.

42. For the examination of the impact of the dumped imports on the domestic industry in India, indices having a bearing on the state of the industry such as production, capacity utilization, sales volume, stock, profitability, net sales realization, the magnitude and margin of dumping, etc. have been considered in accordance with Annexure II of the rules supra.

43. All economic parameters affecting the Domestic Industry as indicated above such as production, capacity utilization, sales volume etc. have been examined as under:

6.1 Volume Effects of Dumped Imports: Import volumes and market share

(A) VOLUME EFFECT: Volume Effect of dumped imports and Impact on domestic Industry

Volume and market share in dumped imports

44. Imports volume from subject territory and other countries, as per the DGCI&S data has been as under:-

Imports in MT	Unit	2004-05	2005-06	2006-07	POI
European Union	MT	1930	4459	3136	3717
Trend	Indexed	100	231	162	193
Other Countries	MT	1536	1013	0	0
Total Imports	MT	3417	5471	3136	3717
Market Share in					

Imports					
European Union	%	56.48	81.50	100.00	100.00
Other Countries	%	43.52	18.50	0.00	0.00

It is observed that imports in absolute terms has increased from 2004-05 to 2005-06, thereafter declined in 2006-07 and once again increased in period of investigation. The imports in the investigation period were almost two times of the import volumes in 2004-05. It is also noted that whereas share of EU in total imports was about 56% in 2004-05, the same increased to 100% in the year 2006-07 and POI.

Assessment of demand

45. Authority has defined, for the purpose of the present investigation, demand or apparent consumption of the product in India as the sum of domestic sales of the Indian Producers and imports from all sources. The demand so assessed is given in the table below.

Demand	Unit	2004-05	2005-06	2006-07	POI
Sales - domestic industry	MT	***	***	***	***
Sales - Other Producers	MT	***	***	***	***
Imports - European Union	MT	1930	4459	3136	3717
Imports - Other Countries	MT	1536	1013	0	0
Total Imports	MT	3417	5471	3136	3717
Demand	MT	***	***	***	***
Trend	Indexed	100	113	119	147

It is seen that the demand for the product under consideration has shown an increase consistently.

Market share in demand

46. Considering imports from various sources and sales of the Indian Producers, market share of subject territory in demand in India comes as shown in table below.

Demand	Unit	2004-05	2005-06	2006-07	POI
Domestic industry	%	88.01	84.41	85.96	79.82
Other Indian Producers	%	2.72	2.41	6.86	13.31
European Union	%	5.24	10.74	7.18	6.87
Other Countries	%	4.03	2.44	0.00	0.00

It is observed that the market share of dumped imports in demand from European Union increased from 5.24% during base year to 6.87% during the POI, whereas the market share of domestic industry declined from *** to *** during the corresponding period. It is also observed that the market share of other Indian Producers has also increased significantly over the period. It may be seen from the data that decreased share of import of other countries have shifted to EU and decreased share of domestic industry has been shifted in favor of other domestic producers and in fact other domestic producers have captured the market share by ***% whereas EU has captured the market share by 1.5%. Their increased share in demand of the domestic market may be due to their desperate effort to stay afloat in the market by reducing prices even at the cost of undercutting the profit margin. However, in absence of detailed facts at this preliminary stage, no plausible conclusion can be drawn and the same shall be found out in the due course of investigation.

Share of dumped imports in relation to production:

47. Authority observed that the dumped imports from subject countries have increased in relation to the production of the domestic industry, as is evident from the following table:

		2004-05	2005-06	2006-07	POI

Imports from EU	MT	1930	4459	3136	3717
Production of domestic industry	MT	***	***	***	***
Imports in relation to production of domestic industry.	%	***	***	***	***

Capacity & Capacity utilization

12. Capacity and capacity utilization of the domestic industry over the injury period is given in the following table:-

	Unit	2004-05	2005-06	2006-07	POI
Capacity MT	MT	***	***	***	***
Capacity Utilization %	%	82.71	71.66	68.26	78.08

It is observed that domestic industry has enhanced capacities in 2005-06 and thereafter in 2006-07. Capacity utilization declined from 2004-05 to 2006-07, which could be partly due to fresh capacities being added. However, the capacity utilization increased during POI in comparison to immediate previous year and slightly reduced in comparison to base year. The reduction in capacity utilization during POI indicates that increased capacity could not be utilized by domestic industry.

Production

13. Production of the domestic industry is given in the following table:-

	Unit	2004-05	2005-06	2006-07	POI
Production MT	MT	***	***	***	***
Trend		100	107	116	133
Demand	MT	36,825	41515	43708	54109
Trend		100	113	119	147
Production in relation	%	***	***	***	***

to Demand					
-----------	--	--	--	--	--

It is observed that production of the domestic industry shows positive trend. However, whereas the demand grew by 47% over the injury period, the production of the domestic industry grew only by 33% and capacity utilization declined. It is thus observed that even though production increased in absolute term, the same has declined in relation to demand in India.

Sales

50. Sales volume of the domestic industry is given in the following table:

	Unit	2004-05	2005-06	2006-07	POI
Sales in MT	MT	***	***	***	***
Trend		100	108	116	133
Demand	MT	36,825	41515	43708	54109
Trend		100	113	119	147
Market Share of domestic industry in Demand	%	***	***	***	***

It is observed that sales of the domestic industry increased in absolute term. However, the increase in sales volume has fallen short of the increase in demand. Further, increase in sale and production is at the same level.

51. As the import volumes are available on segmented basis, the Authority examined sales volumes of the domestic industry also on segmented basis. The following table shows the factual position.

	Unit	2004-05	2005-06	2006-07	POI
Sales total	MT	***	***	***	***
Trend	Index	100	108	116	133

Loose	MT	***	***	***	***
Trend	Index	100	105	110	127
Packed	MT	***	***	***	***
Trend	Index	100	108	120	115
Captive	MT	***	***	***	***
Imports from EU	MT				
Loose	MT	270	833	1015	2121
Trend	Index	100	307	374	783
Packed	MT	1660	3626	2121	1595
Trend	Index	100	218	128	96

The Authority notes from the above that whereas the sales volume of domestic industry in loose form increased consistently, the imports from EU were also in similar band. However, in case of packed form of the product, the volume of imports increased significantly during 2005-06 and thereafter decreased during 2006-07 and POI . On the contrary, the packed sales of the domestic industry consistently increased except during POI.

B) Price Effect of the Dumped imports on the Domestic Industry

52. The impact of dumped imports on the prices of the domestic industry has been examined with reference to the price undercutting, price underselling, price suppression and price depression, if any. For the purpose of this analysis, the weighted average cost of production (COP), weighted average Net Sales Realization (NSR) and the Non-Injurious Price (NIP) of the domestic industry have been compared with the landed cost of imports from the subject country.

53. The product under consideration is sold in India in two forms - loose (also called bulk) and packed. It is noted that the packing cost forms a very substantial part of the cost of production. Loose form however has to be transported in dedicated tankers and extra precautions are required in its handling & transportation, given extremely hazardous nature of the product. In view of significant price difference between bulk and packed form of the

product, the Authority has done comparison of the domestic selling price with the landed value, calculated on the basis of total imports as declared by the exporter, separately for the bulk and packed form of the product. The net sales realization was arrived after deducting all rebates and taxes. Landed value of imports has been calculated by adding 1% handling charge and applicable basic customs duty to the CIF value of subject imports. Huge difference is observed in the packing cost of exporter and domestic industry. Therefore, for the purpose of calculation of price undercutting of packed goods, the packing cost has been removed from net sales realization of packed goods as well as from the landed cost of packed material of the exporter. The landed value of imports was compared with net sales realization of the domestic industry and it was found that the dumped imports are undercutting the prices of the domestic industry as follows :

	Units	As per Exporters data
CIF price of total import		
➤ Loose	Rs/MT	***
➤ Packed	Rs/MT	***
Landed price of imports		
➤ Loose	Rs/MT	***
➤ Packed	Rs/MT	***
➤ Average	Rs/MT	***
Net sales realization		
➤ Loose	Rs/MT	***
➤ Packed	Rs/MT	***
➤ Average	Rs/MT	***
Price undercutting		
➤ Loose	Rs/MT	***
➤ Packed	Rs/MT	***

➤ Average	Rs/MT	***
Price undercutting %		
➤ Loose	%	5-10
➤ Packed	%	80-90
➤ Average	%	10-20

Price Underselling

54. Designated Authority notes that the price underselling is an important indicator of assessment of injury. Non injurious price has been worked out and compared with the landed value of the subject goods to arrive at the extent of price underselling. The non-injurious price has been evaluated for the domestic producers by appropriately considering the cost of production for the product under consideration during the POI in accordance with the practice of the Authority as also taking account the decision of Supreme Court. Non-injurious price has been determined separately for the loose and packed form of the product

55. The analysis of POI data shows that the landed value of subject imports were significantly below the non-injurious price determined. Huge difference is observed in the packing cost of exporter and domestic industry. Therefore, for the purpose of calculation of price underselling of packed goods, the packing cost has been removed from non-injurious price of packed goods as well as from the landed cost of packed material of the exporter.

	Units	As per exporters data
Landed price of imports		
➤ Loose	Rs/MT	***
➤ Packed	Rs/MT	***
➤ Wt. Avg.	Rs/MT	***
Non Injurious Price		
➤ Loose	Rs/MT	***

➤ Packed	Rs/MT	***
➤ Wt. Average	Rs/MT	***
Price underselling		
➤ Loose	Rs/MT	***
➤ Packed	Rs/MT	***
➤ Wt. Avg.	Rs/MT	***
Price underselling %		
➤ Loose	%	1-10
➤ Packed	%	30-40
➤ Wt. Avg.	%	1-15

Price suppression/depression

56. The Authority examined whether the effect of the dumped imports was to depress the prices of the like article in India, or prevent price increases which would have otherwise occurred. For the purpose, the Authority examined the trends in cost to make & sell and compared the same with selling price & landed price of imports.

	Unit	2004-05	2005-06	2006-07	POI
Selling price of the domestic industry					
➤ Bulk	Rs./MT	***	***	***	***
➤ Packed	Rs./MT	***	***	***	***
➤ Average	Rs./MT	***	***	***	***
➤ Trend	Index	100	95.68	83.74	64.61
Cost of production of the domestic industry					
➤ Bulk	Rs./MT	***	***	***	***

➤ Packed	Rs./MT	***	***	***	***
➤ Average	Rs./MT	***	***	***	***
➤ Trend	Index	100	101.54	83.86	79.59
Profit/loss					
➤ Bulk	Rs./MT	***	***	***	***
➤ Packed	Rs./MT	***	***	***	***
➤ Average	Rs./MT	***	***	***	***
➤ Trend	Index	100	79.12	83.89	21.15

It is noted that whereas the cost of production increased between 2004-05 and 2005-06, the same declined thereafter. Selling prices of the domestic industry have however shown consistent decline throughout the injury period. Thus, between 2005-06 and POI, whereas both cost of production and selling price declined, the decline in the selling price was far more pronounced than decline in the cost of production. The imports were thus depressing the prices of the domestic industry in the market.

Profit/Loss

57. The profitability of the domestic industry is given in the following table

	Unit	2004-05	2005-06	2006-07	Jan'07- Dec'07
Profit/ (Loss) before tax	Rs. Lacs	***	***	***	***
Interest expense	Rs. Lacs	***	***	***	***
Profit/(Loss) before interest & tax	Rs. Lacs	***	***	***	***
Trend	Index	100	87.22	95.52	31.38
Profit per unit of sales					

Before interest	Rs./MT	***	***	***	***
Trend	Index	100	79.11	83.89	21.16
After interest	Rs./MT	***	***	***	***
Trend	Index	100	80.66	82.39	23.55

The Authority observes that profits of the domestic industry declined significantly over the injury period. The decline in profits is inspite of continued significant increase in the sales volumes. The Authority determined profits per unit of sale earned by the domestic industry and noted that there is significant decline in the profitability in the POI. In view of very significant fall in profitability in the POI, the Authority noted that landed price of imports from EU declined significantly over the injury period, which directly impacted the profitability of domestic industry. The Authority thus notes that profitability of the domestic industry is directly linked with the import prices.

Examination of other Injury Parameters

58. After having examined the effect of dumped imports on the volumes and prices of the domestic industry and major injury indicators like volume and value of imports, capacity, output, capacity utilization and sales of the domestic industry as well as demand pattern with market shares of various segments, other economic parameters which could indicate existence of injury to the domestic industry have been analyzed by the Authority as follows:

a) Profits/Loss and Return on investments

59. Profits earned by the domestic industry from the sales of the subject goods in the domestic market were as follows: -

	Unit	2004-05	2005-06	2006-07	Jan'07-Dec'07
Profit before tax	Rs. Lacs	***	***	***	***
Trend	Index	100	85.03	96.63	28.02
Interest expense	Rs. Lacs	***	***	***	***

12766I/09-9

Profit before interest & tax	Rs. Lacs	***	***	***	***
Trend	Index	100	87.22	95.52	31.38
Capital Employed	Rs. Lacs	***	***	***	***
Return on Capital Employed	%	***	***	***	***
Trend	Index	100	77.83	86.47	27.52

60. The above data shows that the profitability of the domestic industry has declined over the injury investigation period. The return on the Capital Employed for domestic sales of the domestic industry has declined significantly during the POI as compared to the base year.

Inventories

61. Inventories with the domestic industry moved as follows -

	Unit	2004-05	2005-06	2006-07	Jan'07-Dec'07
Opening Inventories	MT	***	***	***	***
Closing Inventories	MT	***	***	***	***
Average Inventories	MT	***	***	***	***
Trend	Indexed	100	99	102	118

It is noted that inventories with the domestic industry have shown substantial increase.

Productivity

62. Authority notes that productivity of the domestic industry has increased with the increase in capacity and production in absolute term.

	Unit	2004-05	2005-06	2006-07	POI
Productivity per day	MT/Day	***	***	***	***

Employment and Wages

- 63. Authority notes that employment and wages show material injury.

	Unit	2004-05	2005-06	2006-07	POI
Wages	Rs.Lacs	***	***	***	***
Trend	Indexed	100	101	108	86

Cash Flow

- 64. Information regarding cash profit of the domestic industry is given in the following table.

	2004-05	2005-06	2006-07	2007-08
Cash profits (Rs. Lacs)	***	***	***	***
Trend		88.19	96.12	35.06
Cash profit per unit of sale	***	***	***	***

Authority notes that both the constituents of the domestic industry are multi product companies. Therefore, it would be more appropriate to assess the effect of dumped imports on cash flow by considering the trends in cash profits. It is seen that the cash profits of the domestic industry steeply declined over the injury period.

Factors affecting domestic prices:

- 65. Change in cost structure, competition in the domestic industry and prices of competing substitutes have been examined for analyzing the factors other than dumped imports that might be affecting the prices in the domestic market.

The Authority notes that the domestic market for the product under consideration is growing. The landed price of subject imports is below the selling price of both the constituents of the domestic industry. It could not therefore be concluded that inter-se competition is to such an extent that the same led to decline in the prices by the domestic industry.

Growth

66. It is observed that there is a growth in volume parameters viz. in production, capacity utilization sales, and demand etc in absolute term. However, it is noted that the market share of the domestic industry has declined during the POI and the return on capital employed has deteriorated significantly, market share of the dumped imports has increased both in absolute terms and in total demand.

Ability to raise capital investment

67. Authority notes that fresh investments were made up to 2006-07. However, the domestic industry was having much better profitability till that stage. Further, both the companies are multi product companies. However, continued dumping of the product would certainly have adverse impact on the ability of the domestic industry to raise capital investment.

Factors establishing causal link

68. Analysis of the performance of the domestic industry over the injury period shows that the performance of the domestic industry has materially deteriorated over the injury period. The causal link between dumped imports and the injury to the domestic industry is established on the following grounds:

- (i) Imports were resulting in price undercutting in the market. Further, the dumped import prices and consequently the landed price of imports declined significantly during the POI over the injury period. As a direct consequence, the domestic industry was forced to reduce the prices significantly;
- (ii) Decline in prices by the domestic industry resulted in significant price depression faced by the domestic industry;
- (iii) Reduction in the selling prices by the domestic industry has adversely affected its profits, cash flow and return on investments of the company;

- (iv) Even when the domestic industry responded to decline in import prices, by reducing its selling prices, volume of imports increased, resulting in decline in its market share;
- (v) Pattern of imports and sales of the domestic industry in loose and packed form clearly show that the domestic industry was able to improve its sales volumes in loose form with low price undercutting and lesser degree of increase in import volumes; whereas the domestic industry was faced with stagnated sales volumes in packed form with significantly higher undercutting and consequence increase in imports.

The above clearly establish existence of causal link between the dumped imports and injury to the domestic industry.

Conclusions on Injury

69. On examination of various injury parameters, the Authority comes to following preliminary conclusions with regard to injury to the domestic industry.

- (i) Imports from EU have increased in absolute terms as also in relation to production and consumption in India. Increase in volume of imports is far more pronounced in packed form, where the price undercutting was quite high, as compared to the loose form of the product.
- (ii) Dumped imports are significantly undercutting the selling prices of the domestic industry, especially in packed form.
- (iii) Selling price of the domestic industry declined. Even when there was a decline in the cost of production, the decline in the selling price was far more pronounced than decline in the cost of production.
- (iv) Sales volumes of the domestic industry improved. However, segmented sales volumes show that the captive consumption and merchant loose sales volumes increased significantly, whereas packed sales volumes stagnated. By contrast, import volumes in loose category were in the same region, while that in packed form increased significantly.
- (v) The profitability of the domestic industry has deteriorated over the injury period. The decline was most pronounced in the POI. Inspite of much higher sales volumes, profits earned by the domestic industry

were much lower. Further, the decline in profitability in packed sales was far more pronounced than the decline in profitability in loose sales.

- (vi) The return on capital employed and cash profits have deteriorated and shows the same trend as that of profits.

It is thus provisionally concluded that the domestic industry has suffered material injury.

Causal Link and Other Factors

70. The Authority has examined existence of causal link between the dumped imports and injury suffered by the domestic industry in the light of the arguments of the interested parties and having regard to the Rules in this regard.

Effect of other known listed parameters

71. The Authority examined the issue of causal link and other non-attributive factors as laid down in the Rules to segregate injury, if any, caused by other factors. In this regard, the following indicative factors as laid down in the Rules have been examined.

(a) Volume and Prices of imports not sold at the dumped prices

The Authority notes that there are no imports of the product under consideration from any other country during the POI. In fact, share of imports from subject countries has significantly increased over the injury period and reached 100% during the POI. Imports from third countries could not have therefore caused injury to the domestic industry.

(b) Trade restrictive practice and competition between the foreign and domestic producers

The Authority has not found any trade restrictive practice followed by the domestic industry and other Indian producers. The Authority notes that the subject goods are freely importable and there are no trade restrictive practices in the domestic market. M/s Lanxess has alleged that domestic producers started cutting the prices of the product in the

market. The Authority however notes that the landed price of imports is materially lower than the selling price of the domestic industry. Further, the landed price of imports declined very significantly over the injury period. In a situation where the import prices are substantially lower than the selling prices of the Indian Producers, it cannot be concluded that the price reduction in the market were triggered by the domestic producers.

(c) Contraction of demand or Changes in the pattern of consumption

There is no contraction in the overall demand during the period under consideration. On the contrary, the demand has increased by 39% over the injury period. Therefore, any possible decline in demand is not a factor which could have caused injury to the domestic industry. There is no argument by interested parties regarding the change in the pattern of consumption, nor it appears that changes in the pattern of consumption could have inflicted the injury to the domestic industry.

(d) Developments in Technology.

While the sole responding exporter from EU has alleged difference in technology employed by them and the technology employed by the domestic industry, there is no argument on developments in technology causing injury to the domestic industry. The investigation has not shown that technology for production of the subject goods has undergone any significant change. With regard to the difference in technology, the Authority notes that the domestic industry and the Foreign Producers were producing and selling the goods with the same technology over the injury period and the profitability of the domestic industry was much better in earlier years and declined sharply in the POI. Moreover, the information provided by the exporter itself shows existence of significant dumping, which establishes that the exporter is selling the product at much higher prices in its home market as compared to the price at which goods are being exported to India. Had the exporter been selling the goods in the Indian market at prices comparable to its domestic market, the domestic industry in fact would have made much higher level of profits than what it was making in base year. Such being the case, the Authority holds that the difference in technology has not caused injury to the domestic industry. Therefore, it is provisionally

concluded that possible developments in technology has not caused injury to the domestic industry.

(e) Export performance

Export sales of the domestic industry have gone up. Possible decline in exports is not a possible cause of injury to the domestic industry.

Particulars	Unit	2004-05	2005-06	2006-07	POI
Exports Sales	MT	***	***	***	***

(f) Productivity of the Domestic Industry

Productivity of the domestic industry has improved. Possible decline in productivity is not a possible cause of injury to the domestic industry.

From the foregoing, the Authority provisionally concludes that there is no evidence of injury being caused due to other factors.

Overall assessment

The above analysis of various injury and causal link factors show that in spite of improvement in some parameters during the injury period, the performance of the domestic industry has materially deteriorated and the industry suffered injury in terms of sales volumes, capacity utilization, market share, profitability, cash flow and return on investment, while there was a healthy demand for the product in the domestic market. The injury suffered is material and significant. Therefore, the Authority provisionally concludes that the domestic industry has suffered material injury and such injury has been caused significantly by price and volume effects of dumped imports from the foreign country, if any, caused due to other factors is not significant.

Magnitude of injury and injury margin

The Authority has determined non-injurious for the domestic industry ranging into cost of production of the domestic industry. The non-injurious price has been determined separately for the loose and packed form of the product under consideration. This non-injurious price of the domestic industry has been

compared with the weighted average landed values of the subject imports to determine injury margin. Huge difference is observed in the packing cost of exporter and domestic industry. Therefore, for the purpose of calculation of injury margin of packed goods, the packing cost has been removed from non-injurious price of packed goods as well as from the landed cost of packed material of the exporter. The injury margins have been worked out as follows:

Injury margin Calculation

(Rs/MT)

	Loose	Packed	Wt. Avg.
Lanxess			
Non-injurious price	***	***	***
Landed price of imports	***	***	***
Injury margin	***	***	***
Others			
Non-injurious price	***	***	***
Landed price of imports	***	***	***
Injury margin	***	***	***

Conclusions:

74. After examining the issues raised and submissions made by the interested parties and facts made available before the Authority as recorded in this finding, the Authority provisionally concludes that:

- The product under consideration has been exported to India from the EU below its normal value.
- The domestic industry has suffered material injury.
- The injury has been caused by the dumped imports from the European Union.

Indian industry's interest & other issues

75. The Authority notes that the purpose of anti-dumping duties, in general, is to eliminate injury caused to the Domestic Industry by the unfair trade practices of dumping so as to re-establish a situation of open and fair competition in the Indian market, which is in the general interest of the Country. Imposition of anti-dumping measures would not restrict imports from the subject countries in any way, and, therefore, would not affect the availability of the products to the consumers.

76. It is recognized that the imposition of anti-dumping duties might affect the price levels of the products manufactured using the subject goods and consequently might have some influence on relative competitiveness of these products. However, fair competition in the Indian market will not be reduced by the antidumping measures, particularly if the levy of the anti-dumping duty is restricted to an amount necessary to redress the injury to the domestic industry. On the contrary, imposition of anti-dumping measures would remove the unfair advantages gained by dumping practices, would prevent the decline of the domestic industry and help maintain availability of wider choice to the consumers of the subject goods. Imposition of anti-dumping measures would not restrict imports from the subject countries in any way, and therefore, would not affect the availability of the product to the consumers.

Recommendations

77. The Authority notes that the investigation was initiated and notified to all interested parties and adequate opportunity was given to the exporters, importers and other interested parties to provide positive information on the aspect of dumping, injury and causal links. Having initiated and conducted a preliminary investigation into dumping, injury and causal links between dumping and injury to the domestic industry in terms of the Rules laid down and having provisionally established positive dumping margin as well as material injury to the domestic industry caused by such dumped imports, the Authority is of the view that imposition of provisional duty is required to offset dumping and injury pending completion of the investigation. Therefore, Authority considers it necessary and recommends imposition of provisional anti-dumping duty on imports of subject goods from the subject territory in the form and manner described hereunder.

78. Having regard to the lesser duty rule followed by the Authority, the Authority recommends imposition of provisional anti-dumping duty equal to the

lesser of margin of dumping and margin of injury, so as to remove the injury to the domestic industry. Accordingly, provisional antidumping duty on imports of Thionyl Chloride originating in or exported from the European Union equal to the amount indicated in Col 9 of the table below is recommended to be imposed from the date of issue of this Notification.

SN	Heading/ subheading	Description of goods	Country of origin	Country of export	Producer	Exporter	Duty amount	Unit	Currency
1.	28121040	Thionyl Chloride	European Union	European Union	Lanxess AG	Lanxess Deutschland GmbH	33	Per MT.	US\$
2.	28121040	Thionyl Chloride	European Union	European Union	Any combination of producer and exporter other than the sl. No. 1		84	Per MT.	US\$
3.	28121040	Thionyl Chloride	European Union	Any country other than European Union	Any	Any	84	Per MT.	US\$
7.	28121040	Thionyl Chloride	Any country other than European Union	European Union	Any	Any	84	Per MT.	US\$

Rate of exchange: Rs. 41.92 per US\$.

79. The Authority has determined the injury margin basing on the data provided by the exporter, subject to verification of the same at the time of final findings.

80. The following procedure would be followed subsequent to notification of the preliminary findings: -

- The Authority invites comments on these findings from all interested parties and the same would be considered in the final finding;
- Exporters, importers, petitioner and other interested parties known to be concerned are being addressed separately by the Authority, who may make known their views, within 40 days from the date of dispatch of the letter. Any other interested party may also make known its views within forty (40) days from the date of publication of these findings;

- (c) The Authority would conduct further verification to the extent deemed necessary;
- (d) The Authority would hold hearing to hear the views of various interested parties orally;
- (e) The Authority would disclose essential facts before announcing final findings.

R. GOPALAN, Designated Authority